हाथ की उँगलियाँ

" एक ऐसे व्यक्तित्व का कथ्य जो पुरूष भी है और नारी भी। जो हिन्दू भी है, ईसाई भी और मुसलमान भी। जो हिन्दुस्तानी भी है और पाकिस्तानी भी – एशियन भी है, यूरोपियन भी है, अमरीकन भी है, आस्ट्रेलियन भी है और अफ्रीकन भी। जो गरीब भी है और अमीर भी। जो काला भी है और गोरा भी। जो सवर्ण भी है और दलित भी। जो शासक भी है ओर जन–सामान्य भी। जो भूत में भी था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगा। जो आपके साथ रहता हैं– सुबह भी, शाम भी, रात में भी, दिन मे भी, सोते समय भी, जागते समय भी–हमेशा। "

हाथ की उँगलियाँ

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव

जनदृष्टि प्रकाशन, इलाहाबाद

प्रथम सस्करण . 1999

लागत मूल्य · 15 रू० मात्र

प्रकाशक : जनदृष्टि प्रकाशन
74ए/30, पूरा गरेडिया, इलाहाबाद

मुद्रक · पोरवाल प्रिन्टर्स
119/12–जे, दर्शन पुरवा
कानपुर – 208 012
फोन · 295732

HATH KI UNGALIYA

Epic by Suresh Chandra Srivastava

अपनी बात

समय का तकाजा है कि कोई ऐसा महानायक चुना जाय जो देश, काल, परिस्थिति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, समुदाय, क्षेत्र, लिग, रग, भाषा इत्यादि से परे हो। अतः अब महानायक प्रापर नाऊन न होकर कामन नाऊन हो। इसके लिये मुझे 'हाथ की उँगलियाँ' सबसे उपयुक्त लगीं।

आपा—धापी की इस जिन्दगी में साहित्य के लिये जबकि न के बराबर ही समय मिल पाता हो महाकाव्य भी ऐसा हो जो दो—तीन धण्टे में ही पढा—समझा जा सके। अतः महाकाव्य मे मगलाचरण एव वन, पर्वत, वसत, वर्षा आदि के वर्णन फालतू समझ कर हटाना उचित है। वैसे भी जब वन—पर्वत खुद ही दयनीय स्थिति में हो और नगर मे जन—सामान्य को वसत—वर्षा की सुदरता ही न दीख पडे तो कैसा वर्णन ?

चूँकि महाकाव्य मे जीवन के विविध पक्षो की झाँकी होती है अतः इसमे कम से कम शब्दों में साकेतिक सरल भाषा मे सवेदना के साथ समाज, धर्म, अध्यात्म, वर्ण—व्यवस्था, राजनीति, अर्थ—व्यवस्था, इतिहास, सस्कृति इत्यादि शास्त्रो कै निचोड़ का स्पष्ट उल्लेख हो ।

कविता जो याद की जा सके वही होती है जो या तो छद बद्ध हो या किसी प्रतीक के माध्यम से कही जा रही हो। जाहिर है अपने आस—पास से चुना गया प्रतीक अच्छी तरह याद रहता है और यदि अपने अंग में से ही कोई प्रतीक चुना जाय तो उसे कैसे भूला जा सकता है ? लोक – कल्याण की, असुदर को सुदर बनाने की, न्याय की, उच्चतम जीवन मूल्यो की भावना जिस महाकाव्य मे होती है वही कालजयी होता है।

क्या लोरी कविता की श्रेणी मे आती है जो सुला देती है? क्या नारा कविता है जो औरो की सोच होती है? क्या वक्तव्य कविता है जो एक स्थूल कथनमात्र है? क्या इन तीनों में दिल और दिमाग पर जोर पड़ता है ? 'बूझो तो जाने' कविता की श्रेणी में आ सकता है जिसमे कम से कम दिमागी कसरत तो करनी पडती हैं ।

कविता की भी तीन पर्तें होती हैं । पहला स्थूल (सामान्य) पर्त, दूसरा सूक्ष्मपर्त और तीसरा कारण पर्त। कविता के पाठक को कम से कम इतना समझदार तो होना ही चाहिये कि कविता के सूक्ष्म पर्त तक पहुँच सके।

कविता में नवीनता लाने के लिये और कविता को आम लोगो तक पहुँचाने

के लिये सरल भाषा मे कुछ आचलिक शब्दों का प्रयोग कर बतकही लिखने मे हो सकता है, संभ्रात नगरीय लोगो को नवीनता दिखे और मोटी–मोटी पोथियो मे बहुलता से इन कविताओ को स्थान मिले पर जन सामान्य की नजर मे यह कविता नही लगती । उन्हे अब भी कबीर और घाघ चाहिये । केवल सवेदना के चक्कंर मे शब्दो का ढेर लगाना कविता को कहानी की ओर ले जाता है। जन – सामान्य अब भी कुछ उक्ति वैचित्र्य को कविता मानता है। सादी दाल नही वह छौक लगी दाल पसद करता है जिसका स्वाद ज्यादा देर तक टिका रहता है । यह दूसरी बात है कि छौक घी मे हो या तेल मे – छौक जीरे का हो या मेथी का, प्याज का हो या लहसुन का, मिर्च का हो या हीग का – बस छौक हो।

कैलरीज ने कहा है "कवि उस दुनिया का सक्षात्कार करता है जो पाठक या श्रोता के चारों ओर है पर उसकी दृष्टि से ओझल है । चीजे जो अर्थहीन लगती हैं रचना में उजागर होकर एक नया अर्थ देने लगती हैं। कवि अर्थहीन को अर्थ देता है, शब्दहीन को शब्द देता है, मौन को मुखर करता है।" इस सदर्भ मे "हाथ की उँगलियॉ" तो पाठक या श्रोता के चारो ओर न होकर खुद उसके पास हैं और हमेशा रहती हैं। इसी मे मुझे पूरा समाजशास्त्र, मानव शास्त्र, धर्म शास्त्र, अहिसा शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, अध्यात्म शास्त्र, वर्ण व्यवस्था, इतिहास–सस्कृति इत्यादि शास्त्र नजर आते हैं ।

प्रस्तुत महाकाव्य "हार्थ की उॅगलियॉ" को नौ सर्गो मे विभाजित किया गया है। प्रत्येक सर्ग के बारे में कविताओ के पहले सक्षेप मे सकेत दे दिये गये हैं जिससे आम पाठक को समझने मे परेशानी न हो।

पहला सर्ग "उॅगलियॉ, खुर और पजे", समाज सर्ग है जिसमें मानव की तीनों श्रेणियों का वर्णन है। मानव जहॉ "जियो और जीने दो' का पक्षधर है वही हिसक पशु "शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है" का । दूसरा सर्ग "हाथ की उॅगलियॉ" मानव सर्ग है जिसमें मानव मूल्यो एव मानव समाज का वर्णन है । मानव के सकारात्मक पक्ष के साथ–साथ नकारात्मक पक्ष का भी इसमे उल्लेख है। "त्याग के साथ भोग" श्रेष्ठ मानव मूल्यो मे से एक है। तीसरा सर्ग "अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा" वर्ण सर्ग है जिसमे यह स्पष्ट किया गया है कि वर्ण व्यवस्था जाति के आधार पर नही बल्कि कर्म और सोच के आधार पर होती है। चौथा सर्ग "उॅगलियॉ और शख–चक्र" अध्यात्म सर्ग है जिसमें त्याग और संघर्ष के समक्ष भोग और सुख को तुच्छ समझा गया है। त्याग और सघर्ष जहॉ अंतरात्मा की आवाज है वही भोग और सुख किसी का मारा गया हक है। पॉचवा सर्ग "उॅगलियाँ और नाखून" अहिसा सर्ग है जिसमें अहिसा को सर्वश्रेष्ठ

मानव धर्म बताया गया है (आत्मरक्षार्थ हिसा को छोडकर) एक हिसा यदि हजारो हिसाओ को रोकती है तो वह हिसा की श्रेणी मे नही आती छठवॉ सर्ग हाथ और भैंस राजनीति सर्ग है जिसमे राजनीति शास्त्र का वर्णन है. आठवॉ सर्ग "उॅगलियॉ, खीर, रोटी और चमचे" इतिहास–संस्कृति सर्ग है जिसमे भारतीय इतिहास और सस्कृति का वर्णन है। सर्वोत्तम सस्कृति वही है जों राष्ट्रवादी होते हुए भी उदार वादी हो। नवॉं सर्ग "उत्तर उॅगलियॉ, कुछ सदेश, कुछ प्रश्न" समापन सर्ग है। इसमे धर्मच्युत उत्तर मानव को धर्म के रास्ते पर चलने हेतु कहा गया है। जनसख्या विस्फोट को सारी समस्याओं की जड बताकर मानव को आगाह किया गया है। मानव को एक होने का, परस्पर प्रेम रखने का, रचनात्मक कार्य करते रहने का संदेश दिया गया है। यह प्रश्न भी उठाया गया है कि क्या मानव (विभिन्न प्रतिभाओं के होते हुए) को पशुओ के समान एक ही श्रेणी मे रखा जा सकता है ?

यह महाकाव्य आदमी को आदमी बनाने का, आदमी को आदमी समझने का, आदमी आदमी के बीच दूरी कम करने का, सपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार समझने का एक प्रयास है। यह एक उस धर्म की ओर ले जाने का प्रयास है जो सभी का है।

7-1-1999

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव
अधिशाषी अभियंता (जल सस्थान)
6/33, रा–वाटर पपिग स्टेशन,
भैरोघाट, कानपुर

अनुक्रम

उँगलियाँ, खुर और पंजे

(समाज सर्ग)

"उँगलियाँ
जहाँ कर सकती हैं
साँपों का खून
वहीं पकड़ भी सकती हैं
उन्हें जिन्दा
और उखाड़ सकती हैं
उनका विषदन्त".

इस सर्ग मे

उँगलियाँ (हाथ की), खुर (पैरो के), पजे (पैरों के) क्रमश 'मानव', 'मूढ पशु', 'हिसक पशु', के प्रतीक हैं । इन प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक सरचना की ओर सकेत किया गया है ।

मानव मे ही वह अद्‌भुत क्षमता है जिससे वह अपना तो कल्याण कर ही सकता है साथ ही साथ दूसरों का एवं संपूर्ण विश्व का भी कल्याण कर सकता है । परम्पराओ एव मान्यताओ को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार संशोधित या परिवर्तित कर समाज को स्वस्थ, सुंदर एव नूतन बनाये रखने की असाधारण शक्ति उसके पास है। दानव का भी हृदय परिवर्तन कर मानव बनाने की अनुपम कला उसके पास है ।

इन कविताओ के बीच जाकर आप आत्मावलोकन कर सकते हैं कि आपका कर्म आपकी सोच मानवोचित है अथवा नहीं। यदि नहीं तो तदनुसार अपने मे सुधार कर विश्व कल्याण मे सहयोग दे सकते हैं। विश्व कल्याण की मौलिक सोच ही सत्य है। विश्व कल्याण के मार्ग पर चलना ही धर्म है। विश्व कल्याण में बाधा पहुँचाने वाली शक्तियो के विरूद्ध संघर्ष ही सुदर है।

एक

उँगलियो का क्या
खट–खटा सकती है माथा
खुजला सकती हैं सर

और जो खट–खटा लेते है माथा
या खुजला लेते हैं सर
उन्हे सूझ जाती है
सही दिशा

पर खुर क्या करे ?
खट–खटा नही पाते माथा
खुजला नही पाते सर
सो ढूढ नही पाते
सही दिशा

तभी तो बेचारो को
उँगलियॉ
जिस दिशा मे चाहती हैं
उस दिशा में
देती हैं हॉक

दो

किधर जॉय खुर ?
जड होते हैं वे
मुड नहीं पाते
अभागे

और जो मुड़ नही सकते
कैसे छोड सकते हैं वे
बनी बनायी लीक

उँगलियॉ कहाँ जड़ होती है ?
मुड़ सकती हैं वे
पोर–पोर से
आसानी से
अपने आप

और जो मुड सकते हैं
वे भला क्यो चाहेगे
बनी – बनायी लीक से
बॅधना

तीन

साँपो को
कुचल भर सकते हैं
खुर

पंजे
बस कर सकते हैं
लहूलुहान
उन्हें

पर
उँगलियाँ
जहाँ कर सकती हैं
उनका खून
वहीं पकड़ सकती हैं
उन्हें जिन्दा
और
उखाड़ सकती हैं
उनका विष दन्त

चार

उँगलियाँ
बना लेती हैं
हथियार
चला लेती हैं
हथियार
पर हथियार की तरह
इस्तेमाल नही कर सकता
उन्हें
कोई और

खुर
बना नहीं पाते
हथियार
चला नहीं पाते
हथियार
पर हथियार की तरह
उँगलियाँ
जब चाहती हैं तब
कर लेती हैं
इनको
इस्तेमाल

पाँच

खाई
जहाँ अजगर है
खुरो के लिये
और पंजो के लिये
महज एक उछाल
वहीं उँगलियों के लिये
पुल के दो पाये हैं

छः

पाँव जब चलेंगे
तभी चलेगे खुर
पाँव जब चलेंगे
तभी चलेंगे पंजे

पर हाथ यदि न भी चले
तब भी चल सकती हैं
उँगलियाँ
चरैवेति! उँगलियों !
चरैवेति!

सात

कोरा कागज
जहाँ पिस और फट जाता है
खुरों से,
दब और छिद जाता है
पंजों से,
वही उँगलियो से
पा जाता है
उनका कोई निशान
भर–भर जाता है
वह

आठ

खुंर
एक होते हैं
जोड़ी मे भी
एक होते हैं वे
इसीलिये गोल–बंद
रहते हैं वे

उँगलियाँ
पाँच (पंच) होती है
इसीलिये करती रहती हैं
पंचायत

नौ

उँगलियॉ
चुन सकती हैं
तिनके
आसानी से

तिनके तिनके से ही
बन जाते हैं
घर

माना कि खुर
चुन नहीं पाते
तिनके
पर कितनी मेहनत
और मसक्कत से
चुन–चुन कर
तरतीब से
रखे गये तिनकों को
कितनी आसानी से
रौंद देते हैं
वे

दस

उँगलियो पर
ऑख–मूँद कर
किया जा सकता है
भरोसा
क्योकि वे ही थाम सकती हैं
कोई हाथ

जुड – जुड कर ही
बस जाते हैं
घर

पंजे
थाम नहीं सकते
कोई पैर
बस छू सकते हैं
और वह भी नाखून से

क्या सिर्फ छूना
कहा जा सकता है
जुडना ?
क्या न जुडना
कहीं बेहतर नही होता
बनिस्बत नाखूनो से जुडना ?

ग्यारह

माना कि पजे
सहला नहीं पाते
किसी हिलती–डुलती
नरम–नरम देह को
पर कितनी अजीब बात है
कि किसी नरम–नरम देह के
गरम–गरम खून से
कितनी आसानी से
सान लेते हैं
अपने नाखून
वे

बारह

उँगलियॉ
जब बहाती हैं पसीना
खाती हैं मौसम की मार
तब कही उगा पाती हैं
फसल

पर लहलहाती इन फसलों को
महज घास–पात ही
खर–पतवार ही
क्यों समझते हैं खुर ?
आखिर क्यो ?

तेरह

खुर मचलते नही
सुरो पर,
चहकते नही
लयो पर,
थिरकते नही
तालो पर

पर दिखा नही चारा
कि मचलने लगते हैं वे
चहकने लगते हैं वे
थिरकने लगते हैं वे

कभी–कभी
इस सीमा तक
कि तुडा लेते हैं
पगहा

चौदह

पंजे
मचलते नहीं
सुरो पर,
चहकते नहीं
लयो पर,
थिरकते नहीं
तालों पर

पर आई नही नरम–नरम
गरम देह की गंध
कि मचलने लगते हैं वे
चहकने लगते हैं वे
थिरकने लगते हैं वे

कभी कभी
इस हद तक
कि छलॉग लगाकर
मार देते हैं झपट्टा

पन्द्रह

उँगलियाँ
लगती हैं मचलने
मिलते ही गंध
सुरो की,
लगती हैं चहकने
चखते ही स्वाद
लयों की,
लगती हैं थिरकने
पाते ही थाह
तानों की

कभी–कभी
यहाँ तक कि
भूल जाती हैं
उठाना कौर

सोलह

खुरो वाले शरीर को
बॉध लेती हैं,
दुह लेती हैं,
नाँध लेती हैं
उँगलियाँ
और कर लेती है उस पर
सवारी

कितना अच्छा होता
यदि पंजो वाले शरीर को
बॉधतीं,
दुहतीं,
नाँधती
और करतीं उस पर
सवारी
वे

सत्रह

उँगलियॉ
करती हैं सम्मान
दरवाजे की
पहले खटखटाती हैं
और जब पा जाती हैं
इजाजत
तब घुसती हैं
अंदर

खुर और पजे
जानते ही नहीं
कि किसलिये होता है
दरवाजा
आव देखते हैं न ताव
धड़धडाते
घुसे चले जाते हैं
अदर

अठ्ठारह

खुर कहॉ बना पाते हैं
घर ?

चरागाहो मे ही
मस्त रहते हैं वे

बचने के लिये
मौसम से
ढूँढ लेते है वे
कोई पेड छतनार

रह लेते है वे
उन घरों मे
बनाती हैं जिनको
उँगलियॉ
उनके लिये

उन्नीस

पजे कब बना पाते हैं
घर ?

जरूरत पडने पर
ढूढ़ लेते हैं वे
कोई खोह,
कोई गुफा,
कोई झाड़ी

उन घरों को
समझते हैं वे जेल
जिनको बनाती है
उँगलियॉ
उनके लिये

बीस

आमने सामने से
बनाते हैं
शारीरिक संबंध
हाथ वाले शरीर

अपनी मादा को इसीलिये
पहचानते हैं नर
और अपने नर को
पहचानती हैं मादा
और चीन्हते हैं वे
इस सबंध से उपजे
सबधो को
और इस प्रकार बसा लेते हैं
अपना घर

घर—घर से ही
बन जाते हैं
परिवार,
परिवार—परिवार से ही
समाज
और समाज से ही
संस्कृति

इक्कीस

पीठ पीछे से
बनाते हैं
शारीरिक सबंध
खुर वाले और
पजे वाले शरीर

हर नर हर मादा को इसीलिये
समझता है अपनी मादा
और हर मादा हर नर को
समझती है अपना नर

जब चीन्ह ही नही पाते नर
अपनी मादा को
और मादा
अपने नर को
फिर कैसे चीन्ह पायेंगे वे
आपस के संबधो से
उपजे संबधों को ?

फिर कैसा घर !
कैसा परिवार !
कहाँ की सस्कृति !

बाईस

खिले–खिले रहते है
फूल
झरती रहती है जिनसे
सुदरता ही सुंदरता,
कोमलता ही कोमलता
टपकती रहती है जिनसे,
बिखरती रहती है जिनसे
खुशबू ही खुशबू
तभी तो रोक नही पाती
उॅगलियॉ
अपने आप को
और आगे बढ
लगा लेती हैं
उन्हे गले

पर रौंद क्यो देते हैं
उन्हें खुर ?
नोंच क्यों देते हैं
उन्हें पंजे
पंखुरी–पखुरी
कर देते हैं
अलग ?

तेईस

उॅगलियॉ
बनाती हैं दरवाजा
सॉकल,
ताला
और चाभी
क्योकि बचाये रखना
चाहती हैं वे
अपनी ख़ास–खास
और नाजुक–नाज़ुक
चीज

खुर और पजे
जानते ही नही
कि किसलिये होता है
दरवाजा
फिर कहॉ का साँकल ।
कैसा ताला ।
कैसी चाभी ।

और कौन सी होती ही है
उनके पास
अपनी कोई
खास–खास
या नाज़ुक – नाजुक
चीज ?

हाथ की उँगलियाँ

(मानव सर्ग)

"खुर होती
यदि होतीं
उँगलियाँ
एक समान"

X X X X X X

"उँगलियाँ
जहर से मारती हैं
जहर
फिर कर देती हैं उसे
नजरो से दूर"

इस सर्ग मे

हाथ की उॅंगलियों मे "उॅंगलियॉं", "हाथ", "शरीर" क्रमशः "मानव", 'समाज', 'राष्ट्र' के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से मानव मूल्यो की ओर संकेत किया गया है ।

किसी देश या समाज की पहचान वहॉं के मनुष्यों से ही होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होता है। संवेदनशील होता है। वह हर असुदर का विरोध करता है और हर सुंदर को और अधिक सुंदर बनाने के लिये उसे सजाता – सँवारता रहता है।

वही समाज जीवन्त होता है जिसमे सौहार्द होता है। वह अपनत्व और प्रेम से अपनी ओर आकार्षित करता है न कि धन और ताकत के जोर से ।

इन कविताओं के बीच जाकर आप अनुभव कर सकते हैं कि मानव मूल्यों के प्रति आप कितने सजग हैं और आपका समाज कितना जीवन्त है ?

एक

खुशनसीब हैं
उॅगलियॉ
कि वे
हाथ की
उँगलियाँ हैं

जनवरो के तो
हाथ ही नही होते

दो

शरीर नहीं रहेगा
तो कहाँ रहेंगे हाथ ?
हाथ नही रहेगे
तो कहाँ रहेंगी उँगलियॉ ?

उॅगलियॉ नहीं रहेंगी
तो भी रहेंगे हाथ
हाथ नहीं रहेगे
तो भी रहेगा शरीर

कभी–कभी
कुछ उँगलियो को
हो जाती है गलत फ़हमी
कि शरीर रहे न रहे
रहे न रहे हाथ
वे रहेंगी जरूर

तीन

एक समान
कहॉ होती हैं
उॅगलियॉ ?

खुर होती
यदि होती
उँगलियॉ
एक समान

चार

उँगलियाँ
जब थकती हैं
तब दबाती हैं
एक दूसरे को,
एक दूसरे को
चटकाती है,
फोडती हैं
एक दूसरे को,
एक दूसरे को
तोड़ती हैं,
खींचती हैं
एक दूसरे को,
एक दूसरे को
तानती हैं
और हो जाती हैं
तरो ताजा

पॉच

छूने पर एकाएक
चौंक उठती हैं
उँगलियाँ
दुबारा छूने पर
हो जाती हैं चौकन्नी

छेडने पर वे
करती हैं बचाव
करने लगती हैं वार
बार–बार छेडने पर

सोचा जा सकता है
कि क्या करेगी वे आगे
जब बार–बार
छेड़ने के साथ–साथ
दबाया भी जायेगा उन्हें
बार–बार

छः

जब बोलने पर
लग जाते हैं प्रतिबध
नजर भी
फुसफुसा कर रह जाती है
लाख कोशिशो के बावजूद
तब बोल पड़ती हैं
उँगलियाँ

सात

उँगलियॉ
पाट सकती हैं
खाई

पर पाटने के लिये खाई
खोदने पड़ते हैं
गड्ढे

भरसक कोशिश रहती है
इसीलिये उनकी
कि किसी तरह
बाँध दिये जायॅ
खाई के
दोनो हाथ

आठ

ॲधेरे में
बाहर
जब सॉय–सॉस बोलती है
खामोशी
अंदर
जब धक–धक बोलती है
दिल की धडकन
तब भी उगलियाँ
मजे से करती हैं बात

नौ

उँगलियाँ
कॉटे से निकालती हैं
काँटा
फिर फेक देती हैं उन्हें
दूर,
जहर से मारती हैं
जहर
फिर कर देती हैं उसे
नजरो से दूर,
लोहा से काटती हैं
लोहा
फिर रख देती हैं उसे
अलग

दस

उँगलियाँ
खिल जाती हैं
माथे पर लगाकर हल्दी,
उठ जाती हैं निगाहो मे
माथे पर लगाकर रोली,
पहुँचाती हैं ठढ़क
माथे पर लगाकर चदन

पर उँगलियाँ जब ठीक से
पकड़ नहीं पातीं कलम
तब झुक जाता है नीचे अँगूठा
माथे पर लगाकर कालिख

ग्यारह

आँखे
बोलती हैं महाफिल मे,
तनहाई मे पीती हैं

कान पीते है महफिल में,
अँधेरे मे सूँघते हैं

पर उँगलियाँ
अक्सर छूती हैं
कुरेदती है बार--बार
और कभी--कभी
झकझोर भी देती हैं

बारह

यह तो उँगलियो पर
करता है निर्भर
कि किधर बढ़ती हैं वे
कि किधर झुकती हैं वे

जिधर बढ़ेंगी वे
जिधर झुकेंगी वे
उसी को थामेगा हाथ

और जिसे थामेगा हाथ
उसी से पहचाना जायेगा
शरीर

तेरह

जब उँगलियाँ
हो जाती हैं चित्त
तब दिखने लगती है
हथेली
फैल जाता है
हाथ

क्या हथेली का दिखाना
हाथ का फैल जाना
सूरज को,
चाँद को,
सितारों को,
आकाश को
ाचा दिखाना नहीं होता ?

चौदह

ाकतर हाथों की उँगलियाँ
बोना नही चाहती बीज
ौर यदि बोती भी हैं बीज
तो जोहना नही चाहती
अँखुये के फूटने का,
पत्तियो के बढ़ने का,
फूलों के लगने का

सीधे–सीधे चाहती हैं फल
और तुरत चाहती हैं
और इसी में बिता देती हैं
जीवन

पद्रह

चल फिर सकते यदि
तो रेहन रखे जाने से पहले
भाग जाते दूर
जंगल के पार
फुसफसाते हैं
घुटते हुये खेत

घूम–फिर सकते यदि
तो गिरवी रखे जाने से पह
किसी पुल या पहाड़ी से
लगा लेते छलाँग
बुदबुदाते हैं
सुलगते रहते घर–आँगन–द्व

हिल–डुल सकते यदि
तो गिरवी रहने पर भी
चमकते–दमकते
खनक कर उठाते आवाज़
बतियाते हैं जेवरात

पर कितनी अजीब बात है
कि गिरवी रखी हुई उँगलि
न तो फुसफुसाती हैं
न बुदबुदाती हैं
न ही उठती हैं आवाज़
जबकि वे चल–फिर सकती
घूम–फिर सकती हैं
हिल–डुल सकती हैं

ोलह

हाथ
जब बुलाता है
किसी को
अपनी ओर
ब कितना अपनापा
झलकता है उससे !
कितना अपनापा !
कितना जीवन्त
लगता है वह !
कितना जीवन्त !

क्यों न हो ऐसा ?
आखिर उँगलियाँ
बार–बार लगातार
झुकती हैं
हथेली की ओर
से जुड़ना चाहती हो
उससे
बार–बार लगातार
और हाथ
बार–बार लगातार
पसरने के बजाय
मुट्ठी बाँधने
जा रहा हो
बार–बार लगातार

सत्रह

हाथ
जब भगाता है
किसी को
अपने से दूर
तब कितना दुरावा
झलकता है उससे !
कितना दुरावा !
कितना मनहूस
लगता है वह !
कितना मनहूस !

क्यों न हो ऐसा ?
आखिर उँगलियाँ
झुकीं हुई
हथेली की ओर
बार–बार लगातार
होती रहती हैं
दूर
हथेली से
और हाथ
बार–बार लगातार
मुट्ठी बाँधने के बज
पसरा जा रहा हो
बार–बार लगातार

अठारह

कितनी सवेदनशील
होती है उँगलियाँ !

शरीर के
किसी अंग पर
यदि पड़ती है चोट
तब सबसे पहले
पहुँचती हैं उँगलियाँ
सहलाने उसे

शरीर के
किसी अंग पर
पडने वाले
संभावित खतरों
और उस अंग के बीच
बन जाती हैं
दीवार वे,

शरीर के
आँख, कान, नाक, मुँह
के अंदर भी
पहुँच जाती हैं वे
पीड़ा होने पर
उनमें

अंग ही नहीं होतीं
शरीर की
शरीर की रक्षक भी
होती हैं वे

उन्नीस

बालिग नाजुक उँगलियाँ
खिल उठती हैं
बँध जाने पर,
झूम उठती है
लद जाने पर
और तभी तो
सहर्ष स्वीकार करती हैं
बधन
सगर्व वहन करती है
भार

बीस

अकेली उगली
मार नही सकती
कोई तीर,
भाँज नही सकती
कोई लाठी,
थाम नहीं सकती
कोई हाथ,
पकड नहीं सकती
बैसाखी,
उठा नही सकती
गिरे हुये को,
निकाल नहीं सकती
डूबे हुए को

इसलिये – जुड़ो उँगलियों !
जुडो आपस में

इक्कीस

उँगलियाँ

सहला देती हैं
यदि कही पाती है
दुखता हुआ सर

पोछ देती हैं
यदि किसी ऑखो में
पाती हैं ऑसू,
यदि किसी माथे पर
पाती है पसीना

कर देती हैं निकाल बाहर
यदि किसी आँखो मे
पड़ी पाती हैं किरकिरी,
यदि किसी पॉव मे
गड़ा पाती हैं कॉटा

धो–धाकर
कर देती हैं साफ
यदि कही पाती है
कोई धब्बा,
कर देती हैं मरहम पट्टी
यदि किसी शरीर पर
पाती हैं घाव

खुशी–खुशी दे देती हैं
अपना ही निवाला
यदि कही पाती हैं
भूख से व्याकुल कोई जीव

गढ़ देती हैं
कॉट–छॉट कर
यदि कही पाती हैं
कुछ भी थोडा–बहुत बेडौल

तराश देती हैं
घिस–घास कर
रगड़–वगड कर
यदि कहीं पाती हैं
कुछ भी खुरदुरा

सजा देती हैं
करीने से
यदि कहीं पाती हैं
कुछ भी बिखरा–विखरा

जोड देती हैं आपस में
यदि कहीं पाती हैं
कुछ भी टूटा–फूटा

सिल देती हैं
एक दूसरे को
यदि कहीं पाती हैं
कुछ भी कटा–फटा

बना देती हैं
पुल
कभी न मिलने वाले
दो किनारों के बीच

सॅवार देती हैं
पोछ–पाँछ कर,
पहना–वहना कर,
लगा कर तेल– फुलेल
यदि कहीं पाती हैं
कोई मैला–कुचैला,
नगा–वंगा

कर देती हैं
हरा–भरा
बजर जमीन को भी

जानती हैं भली भॉति
कि वे हिस्सा हैं हाथ का
और शरीर का एक अग
इसीलिये जितना पाती हैं उनसे
उससे अधिक ही देती हैं उन्हें

मानती हैं प्रकृति को
देवी–देवता
सादर पूजती रहती हैं
इसीलिये उसे

बाईस

कभी–ध्यान से देखो
वसी पकडे हाथ को

एक–एक करके देखो
ॲगलियो को,
सुटके को,
मॉझा लगी डोरी को
चारा फॅसाये कॅटिये को

आपस मे मिलकर
कैसे लगते हैं सब !

क्या लगती नही
सुटकेदार,
मॉझादार,
कॅटियादार ॲगलियॉ
एक बेहद लम्बी मगर पतली
गर्दन और चोच
बगुले के गर्दन से भी
लम्बी मगर पतली
बगुले के चोच से भी
लम्बी मगर पतली ?

तृतीय सर्ग

अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा

(वर्ण सर्ग)

"माथे पर अँगूठे के
रहती है अकित
शख्सियत शरीर की
पूरी की पूरी"

x x x x

"हाथ की और कोई उँगली
दबा नही पाती घोडा
उतनी आसानी से
उतनी तेजी से
जितनी आसानी से
जितनी तेजी से
घोड़ा दबाती है तर्जनी"

इस सर्ग मे

इस सर्ग की कविताओ मे अँगूठा–चिंतक/मनीषी/ बुद्धिजीवी (त्यागी), तर्जनी–शासक, मध्यमा–प्रशासक/ बुद्धिजीवी (भोगी)/बडे व्यापारी, अनामिका – युवा/ अपरिपक्व/छोटे व्यापारी और कनिष्ठा– मेहनतकश/ बालक/ नासमझ वर्ग के प्रतीक है। इन प्रतीको के माध्यम से वर्ण– व्यवस्था की ओर संकेत किया गया है। इन कविताओ के बीच जाने से स्पष्ट हो जायेगा कि कर्म और सोच के आधार पर वर्ण– व्यवस्था होती है ।

किसी देश की पहचान उसके चितको, मनीषियो एव बुद्धिजीवियो (त्यागी) से होती है। ये ही देशवासियो को सस्कारित करते हैं। शासक इनके परामर्श से देश को उन्नति और प्रगति के शिखर तक पहुँचा सकते हैं। समाज जब इनकी उपेक्षा करता है तो वह अराजक और भ्रष्ट हो जाता है और जब ये अहकार–वश अपने को समाज से ऊपर समझ कर स्वयं–भू बन जाते हैं तब समाज प्रगतिशील नही रह जाता ।

मेहनत कश समाज को गतिशील बनाये रखते हैं। ये ही उत्पादक वर्ग हैं जिन्हे समाज के अन्य वर्गो से काफी अपेक्षाये रहती हैं ।

शासक देश की एकता और अखण्डता बनाये रखता है। जनता को सुरक्षा प्रदान करना और उसे न्याय दिलाना उसका प्रमुख कर्तव्य होता है।

प्रशासक गभीर और निष्पक्ष रहता है जिससे कानून और व्यवस्था बनाये रखता है।

युवा/अपरिपक्व वर्ग को सयम बरतना समाज व देश के लिये लाभप्रद रहता है।

एक

माथे पर अँगूठे के
रहती है अकित
शख्सियत शरीर की
पूरी की पूरी
और शायद इसी वजह से
हमेशा तना–तना सा
रहता है वह

दो

वाजिब माथों पर
करता है राजतिलक
अँगूठा

आजकल मशीनो पर
करता है राजतिलक
वह

तीन

वैसे उँगलियो मे
सबसे वज़नी होता है
अँगूठा
पर अलग–थलग पड़ जाने पर
जब कभी हल्का हो
उठ जाता है वह
तब बन जाता है हाथ
ठेंगा

चार

अँगूठा
तर्जनी के साथ मिल कर
रच लेता है
कला का एक नया संसार,
मध्यमा के साथ मिलकर
रच लेता है
एक नया सगीत,
मध्यमा और अनामिका
के साथ मिलकर
देता है आहुति,
कनिष्ठा के साथ मिल कर
करता नहीं कोई काम
पर जब करना होता है
उसे कोई गणित
तब खुद पहुँच जाता है वह
उसके पास

पाँच

यदि देखना चाहते हो
तर्जनी की नज़र का असर
तो कुम्हडे की बतिया
को देखो

छः

तर्जनी उठ कर करती है
सम्बोधन
अक्सर पीठ पीछे
और कभी कभी सामने

ओ तर्जनियों!
बजाय डरते हुए
हिचकते हुए
आधे मन से
दूर से
फुसफुसाने के
'वह'
निर्भय हो
बेहिचक
विश्वास के साथ
आमने-सामने
कहना सीखो
'तुम'

सात

हाथ जिस समय
उठाता है तर्जनी
किसी की ओर
ठीक उसी समय
उठ जाती है पलट कर
अपने आप एक साथ
उस हाथ की मध्यमा,
अनामिका और कनिष्ठा
उसकी ओर

आठ

हाथ बस साधता है निशाना
घोड़ा दबाती है तर्जनी
हाथ की और कोई उँगली
दबा नही पाती घोड़ा
उतनी आसानी से उतनी तेजी से
जितनी आसानी से जितनी तेजी
से
घोडा दबाती है तर्जनी
यदि दबाती भी है घोड़ा
उसके अलावा और कोई उँगली
तो ढ़ीली होती है
हाथ की पकड़
दिक्कत होती है हाथ को
साधने में निशाना

नौ

रों पर खडा होने के बाद
जब पहली–पहली बार
बढ़ाने की कोशिश करता
है
थ वाला कोई नन्हा शरीर
किसी हाथ की तर्जनी ही
देती है उसे सहारा
और तर्जनी को थाम
धीरे धीरे
सीख जाता है वह शरीर
चलना

दस

जब नाम नही लेते
पिघलने का
जमे हुये लोग,
मौसम भी
देने लगता है उन्हे
पूरा सहयोग,
गरमाहट भी उँगलियों की
डाल नहीं पाती
असर उन पर,
बने रहते हैं वे
जस के तस
ठस के ठस
तब मजबूरन तर्जनी को
होनी पड़ती है टेढ़ी

ग्यारह

जब झूम–झूम कर
नाचने–गाने लगता है
शरीर
तब अँगूठे के साथ मिलकर
मध्यमा बजाने लगती है
चुटकी

शरीर जब खुश-रहता है
तभी खुश रहता है अँगूठा
तभी खुश रहती है मध्यमा

बारह

चूँकि सबसे ऊँची होती है
उँगलियाँ में मध्यमा
इसलिये गंभीर होती है

चूँकि गंभीर होती है
इसलिये खामोश दिखती

चूँकि गंभीर होती है
खामोश दिखती है
इसलिये समझी जाती है
निष्पक्ष

जो बहुधा गंभीर होते हैं
खामोश दिखते है
उदासीन समझे जाते हैं
दूसरों के दुख–सुख मे
वे ही रहते हैं
अक्सर आगे

तेरह

ॲंगूठा, मध्यमा, अमामिका
तीनो मिलकर एक साथ
देते हैं आहुति

पर आहुति देते समय
आग के सबसे करीब
रहती है मध्यमा

चौदह

अनामिका
देखती रहती है
सपने
इतजार रहता है उसे
बँधने का

सपने और इतजारी ही
घोलते हैं
जीवन मे रस

पंद्रह

अनामिका
सजाती रहती है
अपने आपको
इसीलिये मोह है उसे
सोने, चॉदी, जवाहरात से
तभी तो
स्वीकार है उसे
बधन और प्यार

सोलह

बाबजूद इसके
कि बॅधी रहती हैं
कि लदी रहती हैं
धातु और पत्थरो से
आहुति देने में
अनामिका भी
देती है साथ
अँगूठे का
मिलकर
मध्यमा के साथ

सत्रह

बहुत ही नाजुक होता है
अनामिका का बंधन
और बहुत ही महत्वपूर्ण

कभी – कभी तो
निभा देता है
जीवन भर का साथ
पर कभी–कभी
उलट देता है
पूरा का पूरा
राजनीतिक समीकरण

अठारह

कनिष्ठा करती नहीं
कोई काम
न खुद
न और किसी
उँगली के साथ
मिलकर

अपने आप में ही
मस्त रहती है वह

उन्नीस

कभी–कभी
एक हाथ की कनिष्ठा
मिलती है गले
किसी और हाथ की
कनिष्ठा से
और हो जाती है
कुट्टी
आपस में
उन हाथों की

कनिष्ठाओं का
आपस में
गले मिलना
गले मिलना नहीं होता

बीस

हाथ जब तानता है
मुक्का
तब कनिष्ठा
देती है साथ
शेष सभी उँगलियों का
पर हाथ
जब मारता है मुक्का
तब कनिष्ठा ही
खाती है चोट
केवल कनिष्ठा ही

इक्कीस

चूँकि तर्जनी
छोड़ नहीं सकती
उठना किसी की ओर,
अनामिका
छोड नहीं सकती
सोने, चाँदी, जवाहरात
का मोह
और कनिष्ठा
छोड नहीं सकती
काटना कुट्टी
इसलिये मध्यमा को ही
चुनता है हाथ
फेरने के लिये माला
अँगूठे के साथ

बाईस

कितना त्यागी होता है
अगूँठा !
कितना सादा !

क्या सुना है किसी ने
या देखा है किसीने
कि अँगूठा भी कभी पहना हो
अँगूठी ?

तेईस

अँगूठा और तर्जनी ही
मिलकर
पकड़ सकते हैं
कलम,
ब्रुश,
छेनी,
सुई – धागा
निकाल सकते है
चुभे हुये काँटे,
आँखो की किरकिरी

फिर हाथ को
क्यों न हो नाज
इनपर !

चौबीस

इसके पहले कि
माथे पर अँगूठे के
लगे कालिख
कलम पकडने मे
करना उसकी सहायता
तर्जनी! तुम

पच्चीस

आपस में जुड़ती हैं
तर्जनी, मध्यमा, अनामिका,
कनिष्ठा
. इन सबसे जब जुड़ता है
अँगूठा
तभी हाथ बन सकता है
घूँसा
मुट्ठी
तमाचा

कौन कह सकता है कि
हाथ जब बनता है
तमाचा
या घूँसा
या मुट्ठी
तब कनिष्ठा की भागीदारी
कम होती है अँगूठे से
या तर्जनी की भागीदारी
धिक होती है अनामिका से
या मध्यमा की भागीदारी
बराबर नहीं होती अँगूठे के
या तर्जनी के
या अनामिका के
या कनिष्ठा के ?

छब्बीस

तर्जनी! मध्यमे! अनामिके!
कनिष्ठे !
तुम सब मिलकर
ऐसा रखना जुगाड़
कि अलग–थलग
पड़ने न पाये अँगूठा
कि बनने न पाये हाथ ठेंग

तुममें से कोई न कोई
रहना उसके साथ हमेशा

यदि तुम सब मिलकर
दोगी साथ हाथ का
बाँधने मे मुट्ठी
मेज के नीचे
तब अलग पड जायेगा अँग

और यदि जारी रही यही .
तो हाथ बन जायेगा
ठेंगा एक दिन
इसलिये मुट्ठी बाँधने में
यदि देना हाथ का साथ
तो अँगूठे के साथ देना

यदि कभी खुद अँगूठा
हल्का हो उठने लगे ऊपर
और हाथ बनने लगे ठेंगा
तो तुम सब मिलकर
घेरे मे ले लेना उसे
और बाँध लेना मुट्ठी

उँगलियाँ और शंख–चक्र

(अध्यात्म सर्ग)

"ज्यादातर, पर, हाथो की
अधिकांश उँगलियो पर क्यों
शंख बना होता है
क्यों चक्र नही ?"

X X X X X X

"बार–बार आती रहती
आवाज मौन इन शंखों से
संघर्ष करो–संघर्ष करो
न्यायपूर्ण संघर्ष करो"

इस सर्ग मे

इस सर्ग की कविताओ मे 'शंख' – त्याग/सघर्ष/दु.ख/गरीबी और 'चक्र' – भोग/सुख/भाग्य/अमीरी के प्रतीक है। इनके माध्यम से अध्यात्म के बारे मे सकेत किया गया है ।

संसार मे दु.खी/गरीब मनुष्यों की संख्या सुखी/अमीर मनुष्यो की तुलना में बहुत अधिक है। दुःखी/गरीब मनुष्य अपने को कोसता रहता है कि वह अभागा है। उसे रोजी–रोटी के लिए सघर्ष करना पडता है। जबकि सघर्ष से ही व्यक्तित्व में निखार आता है – वह गतिशील रहता है। दुःख और गरीबी से भलीभॉति परिचित होने के कारण दुखियो/गरीबों के दुःख–दर्द को समझ सकता है और उसे दूर करने का उपाय कर सकता है। उनके साथ न्याय कर सकता है।

सुखी/अमीर मनुष्य समझता है कि वह भाग्यवान है। उसे बिना सघर्ष किये ही आजीविका प्राप्त हो जाती है। फलस्वरूप ऐसे लोग अहंकारी, अकर्मण्य हो जाते हैं। ऐसे लोग चूँकि दुख और गरीबी से परिचित नही रहते इसलिये दुखियों/गरीबो के दुख–दर्द को समझ नही सकते। फिर उसे दूर कैसे कर सकते हैं ? उनके साथ न्याय कैसे कर सकते हैं ?

यदि आत्मा–परमात्मा की बात न भी करें तब भी भारत मे यह मान्यता चली आ रही है कि उस परम पिता के एक हाथ में शंख रहता है तो दूसरे हाथ में चक्र। उॅगलियों के माथे पर भी शख या चक मे से ही कोई एक बना होता है – तलवार या कटार नही। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य चाहे दुःखी/गरीब हो या सुखी/अमीर–दोनों के ऊपर उस परमपिता का हाथ रहता है अर्थात् हर मनुष्य उस परम पिता का (उस परम सत्य का) साक्षात्कार कर सकता है। चूँकि शख उस परमपिता की मुट्ठी मे रहता है और चक्र केवल तर्जनी मे इससे यह स्पष्ट है कि दुःखी/गरीब मनुष्य सुखी/अमीर मनुष्य के बनिस्बत उस परमपिता के अधिक निकट रहता है अर्थात् वह आसानी से उस सत्य का साक्षात्कार कर सकता है ।

एक

स्तक पर हर उँगली के
शंख–चक्र में से ही
कोई एक बना होता है

यादातर, पर, हाथो की
काश उँगलियो पर क्यो
शंख बना होता है
क्यो चक्र नहीं?

दो

पथ पर उन हाथो के
अवरोध नहीं मिलते हैं
चक्र बने होते हैं
अधिकाश उँगलियो पर
जिनकी

फिर कैसे जान सकेंगे
कैसे होते हैं पथ के
अवरोध भला वे ?

तीन

चक्र बने होते हैं
अधिकांश उँगलियों पर
जिनकी
इतराते हैं वे हाथ
कि चक्र बनी माथे वाल
अधिकांश उँगलिया हैं
उनकी
कि कट जायेंगे कट जा
इन चक्रों से अपने आप
पथ के सब के सब
अवरोध

शव कब इतराते हैं ?
इतराते कब गिरने वाले
पथ में इन सबके भी त
अवरोध नहीं रहते हैं

चार

पथ पर उन हाथो के
अवरोध मिला करते हैं
शख बने होते हैं
अधिकांश उँगलियों पर
जिनकी

परिचित जो हाथ रहेंगे
पथ के अवरोधों से
वे ही महसूस कर सकेंगे
औरों के पथ अवरोधों क

सुरेश चन्द श्रीवास्त

पाँच

शंख बने होते हैं
अधिकाश उँगलियो पर
जिनकी
कोसते अपने को
वे हाथ
कि शख बनी माथे वाली
अधिकांश उँगलियाँ हैं
उनकी
कि अवरोधों पर
इन शखो का
नही रहेगा असर
जूझना होगा उनको
खुद

तैराक
जूझते लहरों से,
चढने वाले
अवरोधों से
कोसते नहीं अपने को
वे

जूझते हाथो मे ही तो
बनी रहती है
गर्मी— गति

छः

धन्य । धन्य! वे हाथ
शंख बनी माथे वाली
अधिकांश उँगलियाँ हैं
जिमकी
कि बार--बार
आती रहती
आवाज़ मौन
इन शखों से
संघर्ष करो – संघर्ष करो
न्यायपूर्ण संघर्ष करो
मिलने वाले
अवरोधों से

यह तो निर्भर है
हाथों पर
कि मौन इन आवाज़ों पर
कौन अमल करता है
और कौन नहीं ?

सात

संघर्ष करते–करते
पथ के अवरोधों से
शख बाहुल्य
उँगलियों वाले हाथ
ढूढ ही लेते हैं
निपटने का उनसे
सहज और आसान
तरीका

फिर एक दिन
समझने लगते हैं उन्हें
अपना हम सफर

ऐसे हाथ ही
सिखा सकते हैं
औरों को
पथ अवरोधो से डरकर
रूक जाने
या भाग जाने के बजाय
आगे बढ़कर
स्वागत करना

आठ

मस्तक पर उँगलियो के
शंख की जगह
क्यों नहीं बना होता है
सीपी या कौड़ी ?
और चक्र की जगह
क्यों नहीं
तलवार या कटार ?

कहा जाता है
कि परमपिता के
एक हाथ में
चक्र रहता है
तो दूसरे मे शख

यानि सभी उँगलियों के
मस्तक पर रहता है
परमपिता का हाथ
चाहे वे
चक्र बनी माथे वाली हों
या शंख बनी

यह तो उँगलियों पर
करता है निर्भर
कि कौन
महसूस कर पाती हैं उसे
और कौन नहीं

नौ

सुनो! सुनो! ओ चक्र बाहुल्य
उँगलियो वाले हाथ सुनो !

तर्जनी परम पिता की
चक्र लिये रहती है
लेती उससे जब काम
तब दूर उसे करती है .

परस तर्जनी का बस पाते
उससे भी वचित हो जाते
लाभ कोई जब–जब तुम पाते
फिर कैसा इतराना तेरा !

दस

सुनो! सुनो! ओ शंख बाहुल्य
उँगलियों वाले हाथ सुनो !

परम पिता मुट्ठी में अपने
शंख लिये रहते हैं
लेते हैं जब काम
मुँह लगा
मत्र फूँक देते हैं

पाते हो तुम उनके
परस हाथ का पूरे
जब करते सघर्ष
आतरिक ताक़त उनकी
तुम पाते
फिर कोसना कैसा अपने को !

ग्यारह

पर्णकुटी मे गॉव के
रहते थे भरत,
शत्रुघ्न राज महल में
करते थे निवास

भरत पहनते थे वल्कल,
शत्रुघ्न राजसी वस्त्राभूषण
करते थे धारण

कंद–मूल खाते थे भरत,
शत्रुघ्न छप्पन पकवानो का
करते थे भोग

कहा जाता है कि
कि उस परम पिता के
शंखावतार थे भरत
और शत्रुघ्न चक्रावतार

उँगलियाँ और नाखून

(अहिंसा सर्ग)

"जब उँगलियो मे
बढ़ रहे हो नाखून
तब किसी भी क्षण
देखा जा सकता है
एक आम संतुलित
दिमाग़ को
एक धारदार चाकू
में तब्दील होते"

X X, X X X X

"उँगलियाँ बढ़ाती नहीं नाखून
बचाव के लिये
पहन लेती हैं वे बघनखा"

इस सर्ग मे

इस सर्ग की कविताओ मे 'नाखून' 'हिसा' का प्रतीक है। आत्मरक्षार्थ हिसा हिसा नही होती । मनुष्य सामान्यतया अहिंसक होता है। असतुलित दिमाग हिंसक हो सकता है। बचकाने अपरिपक्व, संकीर्ण दिमाग को बड़ी आसानी से हिसा की घुट्टी पिलायी जा सकती है।

सामान्यतया मनुष्य हिसा के लिये नहीं अपने बचाव के लिये हथियार रखता है और जानवरो की तरह पीछे से नहीं, सामने से वार करता है।

जहाँ जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, वर्ग, रंग इत्यादि हिसा के कारण हो सकते हैं वही अन्याय, अत्याचार, शोषण इत्यादि भी । लेकिन अफवाह फैलाकर भड़का कर, स्वार्थ – अहकार वश, अराजकता या आतंक फैलाने के लिये की जाने वाली हिसा खतरनाक होती है।

हिरण्यकश्यप का वध वही मनुष्य कर सकता है जिसका दिमाग़ सिह जितना हिसक हो जाय। इसीलिये वह भूमिगत रहता है जिससे समाज का अनिष्ट न हो सके। वह हिरण्यकश्यप का वध करते समय ही दिखायी देता है और फिर हमेशा–हमेशा के लिये समाज से दूर हो जाता है। संभवतः मानव बम जैसा ही।

बायें गाल पर थप्पड मारने वाले के सामने दायाँ गाल भी कर देना जहाँ कायरता की श्रेणी मे आता है वहीं थप्पड़ मारने वाले हाथ को बीच मे ही रोक लेना मानवता की (यही अहिंसा है)। प्रत्युत्तर मे थप्पड़ मारने वाले के भी बाये गा़ल पर थप्पड मारना हिंसा के सूत्रपात की श्रेणी मे आता है।

हिंसा को हर स्तर पर हतोत्साहित करना ही मानव धर्म है।

एक

खून से उँगलियों के
जुडे होते हैं
हल्के गुलाबी नाखून

कवच होते हैं ये
उनके

थोडा बढ़ जाने पर
जुड जाते हैं नाखून
चमड़ी से
और हो जाते हैं मटमैले

चुभ सकते हैं ये

और बढते जाने पर
गर्द–गुबार और मैल से
जुड़ते जाते हैं नाखून
और होते जाते हैं काले

निकाल सकते हैं ये खून
माहुर कर सकते हैं ये कौर

दो

जब उँगलियों मे
बढ़ रहे हों नाखून
तब किसी भी क्षण
देखा जा सकता है
एक आम संतुलित दिमाग को
एक धारदार चाकू में
तब्दील होते

तीन

उँगलियाँ करती हैं सकोच
बढ़ाने में नाखून
क्योंकि बचाये रखना चाहती हैं वे
उँगलियों की निर्मलता

हिचकते हैं हाथ
पकड़ने मे हथियार
क्योंकि बनाये रखना चाहते हैं वे
हाथों की गरिमा

इसलिये हाथ
बजाय बढ़ाने के
उँगलियों के नाखून
बजाय पकड़ने के
हथियार
बॉध लेते हैं मुठ्ठी

चार

निपटने के लिये
सभावित खतरे से
उँगलियाँ
बढातीं नही नाखून

बचाव के लिये
पहन लेती हैं वे
बघनखा

बघनखा पहनने के बावजूद
सामने से करती हैं वार वे
पीठ पीछे से नही

पाँच

खून का रिश्ता है
बहते हुये खून
और नाखून के बीच

किसने देखा है
नाखून के अंदर
बहता हुआ खून

नाखून को
खून बहाते
सबने देखा है

छ

जब उँगलियों मे
बढ़े हुये हो नाखून
तब कितनी डरावनी !
कितनी बदसूरत !
कितनी घिनौनी !
कितनी अजीब !
लगती हैं वे
गिनगिनाने लगता है मन

भला कैसे पायेगी वे
किसी का प्यार !

सात

अपने ही शरीर में
चुभो लेती हैं नाखून
बचकानी उँगलियाँ

उन्हें न नाखून से मतलब होता है
न उसके चुभने से
और न इन सबके बारे मे
उन्हे कोई जानकारी ही रहती है
उनको तमीज भी नही
रहती इतनी
कि खुद पकड़ सके ब्लेड

आखिर थामना ही पड़ता है
उनकी हमदर्द सयानी
उँगलियों को ब्लेड

आठ

लगाते जाने से तेल
कड़े होते जाते हैं नाखून,
ठोस और काले होते जाते हैं
उनके अंदर के
गर्द – गुबार और मैल,
पैनी होती जाती है
उनकी धार

बड़ी मेहनत से ही
काटे जा सकते हैं वे

नाखून इस लायक नहीं होते
कि लगाया जाय उन्हें तेल

नौ

पिलाते जाने से पानी
नरम होते जाते हैं नाखून,
निकलते जाते हैं
उनके अंदर के
गर्द–गुबार और मैल

कम होती जाती है
उनकी धार

बडी आसानी से
काटे जा सकते हैं वे

नाखून होते ही हैं इस लायक
कि पिला–पिला कर पानी
किया जाय उन्हे पानी–पानी

दस

भरसक कोशिश रहती है
हाथों की
कि छूना न पड़े उन्हें
कोई हथियार

यदि वे छूते भी हैं
हथियार
तो काटते हैं
सबसे पहले
अपने ही हाथो की
उँगलियों के नाखून
यदि बढ़े मिलते हैं वे

इसके बाद
उनकी यही रहती है कोशिश
कि जिन–जिन
हाथ की उँगलियो मे
बढ़े मिलें नाखून
काटते जायँ उन्हें वे

ग्यारह

कभी–कभी ही
पैदा होते हैं
धरती पर
हिरण्यकश्यप

एक चलता – फिरता
पुतला होता है
हिरण्यकश्यप
ातक और अत्याचार का
हिचकता नहीं जो
तनिक भी
खून करने में
अपने ही खून का
बात काटी जाने पर
अपनी

नाखूनों से ही
मारा जा सकता है
हिरण्यकश्यप
और वह भी
हाथ की उँगलियों के

भी तो ऐसा हाथ वाला
रहता है भूमिगत
हिरण्यकश्यप के
बसे खास और मजबूत
समझे जाने वाले
स्तम्भ के यहाँ
ताकि कानों में उसके
पड़ती रहे
त–जनों का आर्त्तनाद,

अबलाओं का विलाप,
मासूमो की चीत्कार
और हिरण्यकश्यप
का अट्टहास
जिससे
हिंसक होता जाय
उसका अहिसक दिमाग
और इस प्रकार
बढ़ते और पैने होते रहे
उसकी उँगलियो के
नाखून

फिर एक दिन
जब हिंसक होते होते
उसका दिमाग
तब्दील हो जाता है
सिंह जितने
हिंसक दिमाग में
तब उस समय,
जब खतम हो जाता है
दिन का उजाला
और दीपक जलाने का
रहता है बाकी,
अचानक प्रगट हो वह
कर देता है
हिरण्यकश्यप का
वध

वध करने के बाद
फिर रहता नहीं
धरती पर वह

सुरेश चन्द्र श्रीवास्त

हाथ और अर्थपात्र

(अर्थ सर्ग)

"कुंभ की भाँति होता है अर्थपात्र
सँकरे गर्दन वाले कुंभ की भाँति
एक बार में जिसमे
डाल सकें मुट्ठी भर अर्थ
निकाल सकें
पर चुटकी भर ही अर्थ
एक बार में उससे "

x x x x x x

"क्या सरकारी अर्थपात्र मे
डालने के लिये अर्थ
उतने जतन से भरते नही मुट्ठी
सरकारी हाथ
जितने जतन से निजी अर्थपात्र मे
डालने के लिये भरते हैं वे ?"

इस सर्ग मे

इस सर्ग की कविताओं में 'अर्थपात्र' 'खजाने'/ 'अर्थव्यवस्था' का प्रतीक है जिसके माध्यम से अर्थशास्त्र की ओर सकेत किया गया है

सुदृढ अर्थव्यवस्था के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि आय से अधिक व्यय न किया जाय ताकि आपातकाल के लिये धन उपलब्ध रहे। जिस देश मे जितने अधिक किसानो, मजदूरो, कारीगरो के श्रम का उपयोग होगा वह देश आर्थिक रूप से उतना ही सुदृढ होगा। अत कृषि और लघु उद्योगो पर विशेष ध्यान आवश्यक है। अधिक से अधिक निवेश होने चाहिए जिससे रोजगार उपलब्ध हो सके। इसीलिये उत्पादन पर कम से कम कर लगने चाहिये । कर उपभोग पर लगने चाहिये ।

सरकारी आदमी कर–वसूली मे तो ढिलाई बरतता ही है, व्यय मे कटौती की तरफ भी ध्यान नहीं देता। फलस्वरूप भ्रष्टाचार बढ़ता है जिससे अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। अत सरकारी दायरा सीमित करना आवश्यक है। नौकर–शाही और सरकारी उपक्रमों की सख्या कम से कम होनी चाहिये और उन पर अकुश रखना चाहिये।

आम आदमी की जरूरत वाली चीजो पर कर कम से कम करना और अनुदान अधिक से अधिक करना उचित होता है। इस कमी को भोग वाली वस्तुओ पर कर अधिक से अधिक लगाकर और अनुदान कम से कम करके पूरा किया जा सकता है। इससे अमीर गरीब के बीच की खाई भी कम होगी और जनता खुशहाल रहेगी ।

कर्ज के साथ सूद लगा रहता है। इसी सूद की भरपाई के लिये कर्ज पर कर्ज लेना पडता है। इसलिये यथा संभव कर्ज से बचना चाहिये। आत्म निर्भर होने के लिये स्वदेशी की भावना रखनी चाहिये। इसलिये आयात पर आधिक से अधिक और निर्यात पर कम से कम शुल्क लगने चाहिये ।

आम आदमी को भी शिक्षित होना चाहिए जिससे वह देश–विदेश की जानकारी रख सके – अपने कर्तव्य और अधिकार के बारे मे जान सके । उसका शोषण न हो सके। शिक्षित होने पर नौकरी के ही चक्कर मे नही रहना चाहिए। कोई भी कार्य करना चाहिए। हर काम का महत्व है और हर काम का देश की अर्थव्यवस्था मे सहयोग है।

एक

कैसा होता है अर्थपात्र ?
क्या बच्चों के गुल्लक जैसा
एक बार में जिसमें
डाल सकें बस
चुटकी भर ही अर्थ
निकाल सकें तब अर्थ
फोड सके जब उसको ?

कितने दिन का होगा
जीवन उसका ?
कब तक बचा रहेगा
निकला बिखरा अर्थ ?

दो

तब क्या कटोरे की भाँति
होता है अर्थपात्र
एक बार मे जिसमें
डाल सके
मुट्ठी भर अर्थ ?

निकाला भी जा सकता है,
पर, उससे
मुट्ठी भर अर्थ
एक बार में

कितनी देर लगेगी
दिखने में पेदी उसकी ?

तीन

कुंभ की भाँति
होता है अर्थपात्र
सँकरे गर्दन वाले
कुंभ की भाँति
एक बार में जिसमें
डाल सके
मुट्ठी भर अर्थ

निकाल सकें , पर,
चुटकी भर ही अर्थ
एक बार में उससे

खाली कैसे होगा
फिर यह अर्थपात्र ?

चार

सयम पर
यदि कभी
रूठ जायँ
कहीं—कही
बादल

कही—कही
यदि कभी
डोल जाय
धरती

उमड़ पड़े
यदि कभी
सागर को
अम्बर से प्यार

यदि कभी
कहीं – कहीं
खंजर लिये
चलने लगे हवा

यदि कभी
देश पर
चढ़ आयें दुश्मन

तो भी
नही होता खाली
अर्थपात्र
एक आदर्श अर्थपात्र

पाँच

"क्या महज नोट और सिक्के
हैं हम ?"
पूछ रहे हैं अर्थ

"उससे पहले
हाट—बाजार हैं हम"
कह रहे है अर्थ

"हाट—बाज़ार से पहले
माल है हम"
बता रहे हैं अर्थ

"माल से पहले
खेत – खलिहान हैं हम
कल—कारखाने हैं हम
उद्योग—धंधे हैं हम"
समझा रहे हैं अर्थ

"और उससे भी पहले
हाथ हैं हम
किसानों के,
मजदूरों के,
कारीगरों के
मेहनत – कश हाथ"
धीरे—धीरे बुद—बुदा रहे हैं अर्थ

और तत्क्षण आने लगती है
नथुने मे मेरे
अर्थ से उठती
पसीने की सुकूनी महक

छ

"क्या महज एक पात्र हूँ मैं
रखे होते हैं जिसमे अर्थ ?"
पूछ रहा है अर्थपात्र

"पात्र ही नही
स्थान हूँ मैं – स्थान"
कह रहा है अर्थपात्र

वह स्थान हूँ मै
जिसमे रहते हैं
किसानो, मजदूरो, करीगरो
के मेहनत कश हाथ

अर्थात्
"देश हूँ मैं – देश
मेहनत–कश मजदूरों,
किसानो,
कारीगरो वाला देश"
धीरे–धीरे समझा रहे हैं अर्थ

और तत्काल आ गया
मेरी समझ मे
किसी देश के
मजबूत होने का
या न होने का
क्या होता है
असली अर्थ

सात

क्या चाहता है हाथ वाला
यही न
कि बना रहे उसकी रगो मे
रक्त का सचार
कि ढँका रहे
उसका तन
कि पैर फैलाने के लिये
रहे जमीन
और सर छुपाने के लिये
छत
कि रहे वह
कलम पकड़ने के काबिल
कि रोगो से लडने के लिये
रहे औजार

और इन सबके लिये
चाहिये उसे
अधिक नही
बस चुटकी भर
अर्थ

हाथ
जब इतना भी
पाते नहीं अर्थ
बहक जाते हैं वे

सुरेश चन्द्र

आठ

कुछ करो विष्णुगुप्त !
कुछ करो
कि बहकने न पाये हाथ

कम से कम
आम जरूरत वाली
चीजों पर लगा बंधन
कर दो ढीला
जितना भी
कर सकते हो तुम
चाहे इसके लिये
चमकीली जरूरत वाली
चीजों पर
लगा बंधन
जितना भी
कसना पड़े तुम्हे
कसो

बहकने न पायें हाथ
विष्णुगुप्त !
बहकने न पायें

नौ

हाथ जब चाहेगा
दाल–रोटी की जगह
शराब – पकवान,
कपास की जगह
रेशम,
दरवाजे की जगह
फाटक,
हैण्डिल की जगह
स्टीयरिंग,
देशी किताब की जगह
विदेशी,
बॉसुरी–गेंद की जगह
टी०वी०–ताश
तब उसे चाहिये ही चाहिये
चुटकी – चुटकी भर
अर्थ की जगह
मुट्ठी – मुट्ठी भर
अर्थ

दस

हाथ जब चहेगा
चुटकी भर अर्थ की जगह
मुट्ठी भर अर्थ
तब या तो
रेतना पड़ेगा उसे
अर्थपात्र का गला
पूरा का पूरा
या अर्थपात्र को
करना पड़ेगा धराशायी

क मुश्किल होता है
रेतना
अर्थपात्र का गला
बनिस्बत
धराशायी करने के
इसलिये धराशायी ही करते हैं
ऐसे हाथ
अपना अर्थपात्र

ग्यारह

पसीना बहाओ हाथ !
बहाओ पसीना
स्वदेशी अपनाओ हाथ !
अपनाओ स्वदेशी

पसीने से
गर्म हवा भी
लगती है . शीतल

पसीना बहाते समय
आते नही
ऊल–जुलूल विचार

पसीना बहाने से
स्वादिष्ट लगता है
रूखा–सूखा भोजन
नींद आती है
भरपूर

देशी माल से ही
आती है
माटी की गंध

और माटी ही है
हमारी प्रकृति के
अनुकूल

ठीक रहेगा इससे
हाज़मा

पसीना बहाओ हाथ !
स्वदेशी अपनाओ हाथ !

बारह

अच्छा हैं हाथ
कि हो गये हो तुम
लम पकड़ने के काबिल

जो हाथ
कलम पकडने के
हो जाते हैं काबिल
वे ही समझ सकते हैं
कि कैसी है
और किधर जा रही है
दुनिया
कि दौड़ रहा है
या चल रहा है
या लेटा है
या करवट बदल रहा है
देश
कि क्या होता है पसीना
ओर क्या होती है
उस की वाज़िब कीमत
कौन सा रास्ता अच्छा है
कौन ठीक – ठाक
और कौन खराब

हाथ कम से कम .
क़ाबिल तो हो ही जाओ
कि यदि भली भाँति
पकड़ न सको कलम
तो ठीक – ठाक ढंग से
पकड़ ही लो

तेरह

पर ये क्या हाथ !
कि क़लम पकड़ने के
काबिल हो जाने पर
चाहते हो तुम
बस कलम घिसना
कागज रँगना

और यदि कलम घिसने
कागज रँगने का
मिलता नही अवसर
तो पसद करते हो
रहना छूँछा

छूँछे रहने से बेहतर है
कि पकड़ लो फड़ुआ–
खुर्पी – हँसिया
बसुला – हथौड़ा
झउआ – खाँची
कन्नी – तसला
चरखा –करघा
तराजू – बटखरा
में से कोई एक
और बहाओ पसीना

कोई नहीं कह सकेगा
कि हराम की तोड़ रहे
रोटी
कि भरने में राष्ट्र का
नहीं है तुम्हारा कोई

चौदह

क्या सरकारी अर्थपात्र मे
डालने के लिये अर्थ
उतने जतन से
भरते नही मुट्ठी
सरकारी हाथ
जितने जतन से
निजी अर्थपात्र मे
डालने के लिये
भरते हैं वे ?

बिछल – बिछल जाते हैं
कुछ न कुछ अर्थ
उँगलियो की झिरी से
उनकी
अर्थपात्र के बाहर

कम करो विष्णुगुप्त !
कम करो
सरकारी हाथों की संख्या

पद्रह

क्या सरकारी अर्थ पात्र से
निकालने के लिये अर्थ
उतने जतन से
बनाते नही चुटकी
सरकारी हाथ
जितने जतन से
निजी अर्थपात्र से
निकालने के लिए
बनाते हैं वे ?

फिसल – फिसल जाते हैं
कुछ न कुछ अर्थ
चुटकी से उनकी
अर्थपात्र के बाहर

क्या आम हाथो पर
बोझ नहीं हैं सरकारी हाथ ?

अंकुश रखो विष्णुगुप्त !
अंकुश रखो
सरकारी हाथो पर
जितना रख सकते हो तुम

सोलह

माना कि कर्ज से
भर लोगे विष्णुगुप्त !
अपना अर्थपात्र

पर कितने दिन ?

खिर कितने दिन तक
भरा रहेगा वह ?

मालूम नहीं बिष्णुगुप्त !
कि कर्ज़ के साथ
लगा रहता है
एक मर्ज
भी न छूटने वाला मर्ज
जो अंदर ही अंदर
अर्थपात्र की पेंदी मे
कर देता है छेद

और किसानो के,
मजदूरों के,
कारीगरों के,
पसीने से मिलने वाला
सब अर्थ
हो जाता है
इस मर्ज़ के हवाले
और कर्ज बना रहता है
ज्यों का त्यो
जस का तस

सत्रह

लगाने से
उधार की विदेशी खिजा
समय से पहले
पकने लगेगे बाल
बढ़ने लगेगा रक्तचाप

यदि जारी रहा विष्णुगुप्त
यही क्रम
तो एक दिन
गिरवी हो जायेगा
शरीर का रोयॉ–रोयॉ,
कर्ज़ के बोझ से
झुक जायेगे
गर्दन और कंधे,
चक्कर खाता रहेगा सर
बार – बार,
कुछ भी दिखाई नहीं देग
स्पष्ट,
शर्म से झुकी रहेगी
आँखें

विष्णुगुप्त !
तब तुम्हारी उँगलियो में
कभी भी नही आ पायेग
इतनी ताकत
कि तुम बॉध सको
अपनी चुटिया

अठ्ठारह

देशी सरसों का तेल
क्या तुम भूल गये
विष्णुगुप्त !

सर के बालों में ही नहीं
चेहरे पर भी मलो इसे

समय से पहले पके
अधपके बाल
हो जायेंगे काले

चक्कर खाना सर का
हो जायेगा बंद

सब कुछ दिखने लगेगा
साफ–साफ

दिमाग़ रहेगा तरोताजा

चेहरे की झुर्रियाँ
हो जायेंगी गायब

माथे की सलवटें
हो जायेंगी दूर

नी होती जायेगी चुटिया
एक ही झटके मे
बॉध लोगे उसे

उन्नीस

आओ कुछ करें विष्णुगुप्त !
मिल जुल कर कुछ करें
कि देशी हाथ
बनने न पायें
बाज़ार
विदेशी माल के

क्यो नहीं बन सकते विष्णुगु
देशी हाथ
बाजार
देशी माल के ?
क्या परती है या पथरीली है
या रेतीली है देश की जमीन
या नदियों में नहीं है पानी ?
या कमी है किसानों,
मजूदरों, कारीगरों की ?
या नहीं रहे अब गुरू ?

अब भी
मिल जायेंगे विष्णुगुप्त !
देश में
ढ़ाके के मलमल
अब भी बन सकते हैं
विदेर्शी हाथ
बाज़ार
हमारे माल के

आओ मिल जुल कर
कुछ करें विष्णुगुप्त!

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव (62

हाथ और भैंस

(राजनीति सर्ग)

"व्यवस्था में
यदि शामिल कर ली जाती हैं
भैंस
तो जाहिर है वे चरेंगी ही
और अपनी बिरादिरी को भी
दे देगी पूरी की पूरी छूट
चरने की"

x x x x x x

"नजरें उठाये सीना ताने शरीर का
जब बायाँ कदम आगे रहता है
तो बायाँ हाथ पीछे
और जब दायाँ कदम आगे रहता है
तो दायाँ हाथ पीछे"

इस सर्ग मे

इस सर्ग की कविताओ मे

'भैंस'	–	मोटी बुद्धिवाले / लगभग अशिक्षित मानव
'दायॉ पैर'	–	दक्षिणपथी विचारधारा
'बायॉ पैर'	–	वामपंथी विचारधारा
'दायॉ हाथ'	–	राष्ट्रवादी विचारधारा
'बायॉ हाथ'	–	उदारवादी विचारधारा

के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से राजनीति के बारे मे सकेत किया गया है। अब भी दुनिया मे मोटी बुद्धि वाले लगभग अशिक्षित मानव हैं जो अपने शोषण, दोहन, उत्पीडन को अपनी नियति मानते है। इन्ही के कारण तानाशाही सामन्तवादी, पूँजीवादी व्यवस्था पनपती है। लोकतत्र के ये ही वोट–बैंक हैं जिनका दुरूपयोग कर अपात्र (भ्रष्ट, अराजक, सकुचित सोचवाले, नैतिकता से दूर रहने वाले) लोग सत्ता की कुर्सी पर काबिज हो जाते हैं ।

समाजवाद, साम्यवाद की अवधारणा तो अच्छी है लेकिन यह मूढ पशुओ पर ही लागू हो सकती है मानव पर नहीं। मानव में बुद्धि विवेक होता हैं। उनमे अलग–अलग प्रतिभाये होती हैं। इन अवधारणाओ के अतर्गत सबको समान अवसर देना उचित है जो संभव है।

कोई भी शासन व्यवस्था तभी सफल हो सकती है जब शासक वर्ग और जनता दोनो जितना अपने अधिकार के प्रति सजग रहते हैं उतना ही अपने कर्तव्य के प्रति भी सजग हो जायें ।

लोकतत्र मे नैतिकता आवश्यक है – शासक वर्ग एव जनता दोनो मे। इसमें उचित और साक्षर पात्र ही प्रतिनिधि चुना जाना आवश्यक रहता है जिसके लिये जनता को साक्षर एव जागरुक रहना आवश्यक है। इसी तरह लोकतत्र मे विपक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। विपक्ष की सख्या अत्यधिक कम होने पर शासक वर्ग निरंकुश हो जाता है - तानाशाह हो सकता है ।

वह देश और समाज जीवन्त होता है जो राष्ट्रवादी उदारवादी हो अथवा उदारवादी राष्ट्रवादी हो ।

एक

चाँद और मंगल तक
अब
पहुँच चुके हैं हाथ

फिर भी कुछ हाथ
उठते नहीं
बेवजह बरसती
लाठियों के खिलाफ
अब भी

क्या आती नहीं
ऐसे हाथ वालों के
रोयें -- रोयें से
भैंस की गंध ?
खालिस भैंस की

दो

हाथ
कब बरसातें हैं लाठी
चरागाह में चरती
ीधी--सादी भैंस पर ?
भैंस जब
मारने को होती हैं मुँह
किसी हरे भरे खेत में,
बढ़ाने की होती है पाँव
किसी दलदल
या खाई की ओर
भी बरसाते हैं लाठी वे

तीन

इकार कर दिये हैं
अब
प्रकृति का बधन भी
हाथ

फिर भी
कुछ हाथ
बँधे हुये है
अन्न से
अब भी
और इस प्रकार बँधे हुये
अपने अन्नदाता से

उन्हें इससे मतलब नहीं
कि मिलने वाला अन्न
चोरी का है या लूट का
या किसी गरीब का
मारा गया हक़ है

क्या आती नहीं
ऐसे हाथ वालों के
खून में
भैंस की गंध
जो बँध जाती है उससे
जो देता है उसे सानी
और दुहा देती हैं
अपने को खुशी--खुशी

चार

यदि भैंस को
बाँध भी लेते हैं हाथ
दिखाकर चारा
तो भी दुहते हैं उसे
चारा खिलाने के बाद ही
और उसी हद तक
जिस हद तक
बचा रहे थनों में उसके
उसके दूध-पीते पड़वे-पड़ियों
के लिये
समुचित दूध

पाँच

अर्थ से आकर्षित होते हैं
अधिकतर हाथ
और आकर्षित होते-होते
बँध जाते हैं उससे
और इस प्रकार बँध जाते हैं
अर्थदाता से

फिर भी बँधे होते हैं कुछ हाथ
अर्थ की बजाय कलम से,
वीणा से,
ब्रुश से,
छेनी-हथौड़ी से,
गेंद से
हालाँकि बहुत कम होती है
इनकी संख्या

छ:

चारे के अलावा
और किससे
मतलब रखती हैं भैंस

चूँकि सिर्फ चारे से ही
मतलब रखती हैं भैंस
इसलिये एक ही कैटि
रखी जा सकती हैं वे

सात

क्या सिर्फ अन्न से ही,
मतलब रखते हैं हाथ
अर्थ से नहीं ?

अन्न-अर्थ के अलावा
कलम से,
वीणा से,
ब्रुश से,
छेनी-हथौड़ी से,
गेंद से
मतलब रखते हैं वे

और इसलिये एक ही
कैटिगिरी में
नहीं रखे जा सकते हा
चाहे लाख कोशिश क

सुरेश चन्द्र [illegible]

आठ

ना कि एक ही कैटिगिरी मे
रखे नहीं जा सकते हाथ
फिर भी कैसे करोगे न्याय
मादित्य ! जब हर हाथ को
दोगे नहीं अवसर
कलम पकडने का,
वीणा का तार छेड़ने का,
ब्रुश पकंड़ने का,
छेनी–हथौड़ा चलाने का,
गेंद खेलने का ?

क़ातिल तक को
दिया जाता है अवसर
सफाई का अपने
फिर इन्हे क्यों नही ?

नौ

जब सत्ता में रहेगी भैंस
तो क्षेत्र में विकास के लिये
उठाना ही पड़ेगा उसे क़दम

उस समय उसके पीछे
कने के लिये सही दिशा में
नही रहेगा कोई हाथ

क्या उठा पायेगी वह
कोई ठोस क़दम ?
क्या रख पायेगी
सही जमीन पर पॉव ?

दस

व्यवस्था में
यदि शामिल करली जाती
भैंस
तो जाहिर है वे चरेंगी ही
अपने अधिकार
क्षेत्र में आने वाली
लहलहाती फसलों को
मेहनत–मशक्कत और चा
उगाते हैं जिसे हाथ

इतना ही नहीं
वे तो चरेगी ही
अपनी बिरादिरी को भी
दे देगी
पूरी की पूरी छूट
चरने की

और इस प्रकार एकदिन
ऐसा आयेगा
जब चर ली जायेंगी
सारी की सारी फसल
अन्न बनने के पहले ही

फिर अगली फसल के लि
बीज के पड़ जायेंगे लाले

ग्यारह

जब भैंस की शासन में
हो जायेगी भागीदारी
तब मौसम के गरम होने पर
बजाय ढूँढ़ने के पेड़ों की छॉव
खोजेगी वह कीचड़
और देखेते ही कीचड
जमा लेगी उसमें आसन
फिर जब वह चलेगी
उछालती फिरेगी कीचड उनपर
मिलेंगे रास्ते मे उसके
जो भी साफ सुथरे
चलेंगे उसके दाये—बायें
जो भी पाक—साफ

और इससे भी गयी गुजरी
बात यह होगी
कि जहॉ—जहाँ उसे दिखेगे
छायेदार पेड़
कटवा—कटवा कर उन्हें
बनवाती जायेगी
छिछले—छिछले तालाब
पोखर—गड़हे

बारह

सामान्य चाल के लिए शरीर का
क्या बायॉ क़दम
उतना जरूरी नही है
जितना दायॉ कदम ?
जरूरी है कि इनमे से
एक आगे रहे तो दूसरा पीछे

तेरह

शरीर जब बाये कदम के साथ
रखेगा बायाँ हाथ भी आगे
या दाये कदम के साथ
दायॉ हाथ भी आगे
तब कैसे चल पायेगा
अपनी स्वाभाविक चाल ?
बिगड़ जायेगा सतुलन उसका

नजरें उठाये सीना ताने शरीर
जब बायॉ क़दम आगे रहता है
तो बायाँ हाथ पीछे
और जब दायॉ कदम आगे रहत
तो दायॉ हाथ पीछे

चौदह

जब कोई चीज हमे लगती है
बहुत—बहुत अच्छी
जब दिख जाता है हमें कोई
परम आदरणीय
लोकप्रिय व्यक्तित्व
जब देखते हैं हम कोई
दिल को छू लेने वाला करतब
तब अनायास ही मिलने लगते
हमारे दायें—बाये हाथ
बार—बार लगातार

कितनी अच्छी होती हैं
दायें—बायें हाथो के
बार—बार मिलने की गडगडाह

अष्टम सर्ग

उँगलियाँ, खिचड़ी, रोटी और चमचे

(इतिहास – संस्कृति सर्ग)

"हाथ की सभी उँगलियाँ
जब पाती हैं अन्न
तभी बना पता है हाथ
पूरा कौर
समुचित आहार पाता है शरीर"

x x x x x x

"नमस्कार करते समय
जोडते हैं हाथ
दोनों हाथ
दाहिना और बायाँ
बराबर – बराबर
एक साथ"

इस सर्ग में

इस सर्ग की कविताओं में

खिचडी/खीर/सत्तू – हिन्दुओ (हडप्पा संस्कृति) /आर्यो के शासन काल
रोटी – मुसलमानों के शासन काल
एवं छुरी/चमचे/कॉटे – अंग्रेजो के शासन काल के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से भारत के इतिहास के बारे में संकेत किया गया है ।

(ज्ञातव्य हो कि पूर्व के सर्गों मे तर्जनी – शासक, अँगूठा – चिंतक/मनीषी, मध्यमा – प्रशासक, शेष उँगलियाँ – अन्य वर्ग, शरीर – देश एव हाथ समाज के प्रतीक के रूप में उल्लिखित किये जा चुके हैं)

उपरोक्त के अतिरिक्त दायॉ हाथ – राष्ट्रवादी तथा बायॉ हाथ – उदारवादी विचारधारा के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से भारत की विभिन्न सस्कृतियों के बारे मे संकेत किया गया है।

इस देश के चिंतको/मनीषियो ने अपनी संस्कृति मे दोनो हाथ (बायाँ और दायाँ) जोड़कर किसी का स्वागत/आदर करने की जो परम्परा डाली है वह कितनी श्रेष्ठ, बेजोड और सर्वकालिक है। यह राष्ट्रवादी होने के साथ–साथ उदारवादी होने का सकेत देती है।

वही संस्कृति जीवन्त होती है जो उदार विचार धारा वाली हो और जिसके मूल्य, परम्परायें एव मान्यतायें देश – काल–परिस्थिति के अनुसार राष्ट्रीय विचारधारा के साथ संशोधित परिवर्तित होते रहें ।

हमारे समाज में चितकों/मनीषियों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता रहा है।

एक

क्यों निकालता है हाथ
अपनी तर्जनी से ही घी,
शहद,
चटनी ?

[cut off]र तर्जनी से ही क्यो ?

क्या हाथ की
बाकी चार उँगलियों को
मार गया होता है
फालिज ?
जबाब दे चुकी होती हैं
उनकी पोर–पोर से
मुड़ने की ताक़त ?

क्या सिवाय तर्जनी के
शेष चारों उँगलियों को
चाहता नहीं हाथ ?
या तर्जनी से
डरता है हाथ ?

[cut off]केलनी अलग लगती हैं !
कितनी अपरिचित !
शहद या घी या चटनी
से सनी तर्जनी
हाथ की बाकी चार
[cut off]ली –खाली उँगलियो से

दो

क्या अकेली तर्जनी
बना सकती है क़ौर ?

अकेली तर्जनी
उठा भी तो नहीं सकती
अन्न का
एक दाना भी
बस लिपटे रह सकते हैं
उससे
अन्न के कुछ कण

फिर कैसे भर पायेगा पे[cut off]
कितने दिन चल पायेगा

तीन

हाथ की सभी उँगलियाँ
जब पाती हैं अन्न
तभी बना पाता है हाथ
पूरा कौर

समुचित आहार
पाता है शरीर

सुरेश चन्द्र श्रीवास्त[cut off]

चार

कितने अच्छे होते थे
पहले के शरीर
जो खाते थे खिचडी,
खीर,
सत्तू !

हाथ की सभी उँगलियाँ
मिलकर
बनाती थीं कौर

हाथ की सभी उँगलियाँ
पाती थी अन्न

दमकता रहता था
शरीर

तभी तो
दत कथाओं में
सोने की चिड़िया
कहलाता था
यह शरीर

पाँच

बीच मे
न जाने कहाँ से
आ गयी
रोटी

और शरीर
खाने लगा
रोटी

हाथ की तर्जनी,
मध्यमा और अँगूठा
साथ मिलकर
बनाने लगे कौर

क्या शरीर को
पसद थी
रोटी
या हाथ
ही चाहता था
रोटी तोड़ना ?

क्या शरीर की
मजबूरी थी
रोटी
या रोटी तोड़ने को
मजबूर था
हाथ ?

छ.

फिर न जाने कहाँ से
आ गये
चमचे, छुरी और कॉटे

और हाथ
इन्ही चमचों, छुरियों
और कॉंटो से
बनाने लगा कौर
धातु के चमचो, छुरियों
और कॉंटो से
संवेदन–शून्य धातु के
जिन्हे पकड़े रहते हैं
हाथ के
गूठे, मध्यमा और तर्जनी
एक साथ
मिलकर

और बजाय हाथ की
सभी उँगलियो के
बजाय हाथ के
ॲगूठे और तर्जनी के
हाथ के ॲँगूठे,
यमा और तर्जनी से बँधे
चमचे, छुरियाँ और कॉंटे
पाने लगे अन्न

सात

स्वतंत्र है अब शरीर
अब यह उसकी मर्ज़ी
कि खिचडी खाये या रोटी
खीर खाये या ब्रेड
सत्तू खाये या सैण्डविच

इसी तरह आजाद हैं अब हाथ
अब यह उनकी मर्ज़ी
कि अपनी सभी उॅगलियों से
बनायें कौर
या सिर्फ ॲगूठे, मध्यमा और
तर्जनी से
या चमचे, छुरी और कॉंटे से
जिसको पकड़े रहते हैं
उसके ॲँगूठे, मध्यमा और तर्जन
साथ मिलकर

हालाँकि आजकल
खिचड़ी के साथ–साथ
रोटी भी खाता है शरीर
पर अधिकतर हाथ
चमचों, कॉंटों, छुरियों से
बनाते हैं कौर अब भी
जिन्हे थामे रहते हैं
उनके ॲँगूठे, मध्यमा और तर्जन
साथ मिलकर
शायद आधुनिक और
प्रगतिशील कहलाने के
चक्कर में

आठ

नमस्कार
करते समय
जोड़ते हैं हाथ
दोनों हाथ
दाहिना और बायाँ
बराबर — बराबर
एक साथ

आदाब अर्ज
करते समय
उठाते हैं
दाहिना हाथ
सिर्फ़ दाहिना हाथ
क्यों नहीं बायाँ हाथ ?
या क्यों नहीं दोनों हाथ
दाहिना और बायाँ ?

शेक हैण्ड
करते समय
मिलाते हैं
दाहिना हाथ
सामने वाले के
दाहिने हाथ से
क्यों नहीं बायाँ हाथ ?
या क्यों नहीं दोनों हाथ
दाहिना और बायाँ ?

नौ

जिस हाथ को हम लोग
शर्म से कहते हैं 'ठेगा'
उस हाथ को और लोग
गर्व से कहते हैं 'थम्सअप'

तो क्या किसी को
दुनिया से उठा देने को
वे लोग कहते हैं 'अप'

दस

लगता है कितना जीवन्त
दिखता है कितना आकर्ष
गुलदस्ता संस्कृति का
बायें हाथ में

उतना ही जीवंत
उतना ही आकर्षक
लगता है यह उस समय
जब इसके बासी और मुर
संस्कृति के फूलों को
निकालता है दायाँ हाथ
और खोंस भी देता है
उसी समय इनकी जगह
ताजे और सुगंधित फूल
संस्कृति के
दायाँ हाथ ही

नवम सर्ग

उत्तर उँगलियाँ, कुछ संदेश, कुछ प्रश्न

(समापन सर्ग)

"अधिकतर हाथ काम के नाम पर
या तो मारेंगे मक्खी
या फिर पैदा करेंगे और
छोटे–छोटे हाथ"

X X X X X X

"अलग–अलग कद काठी वाली
उँगलियो ! जुड़ो
अपनी–अपनी रगों मे
एक ही लहू रखने वाली
उँगलियो ! एक हो"

X X X X X X

"अगूँठे! तर्जनी!
तुम दोनो मिलकर थामना कलम
और लिखना सभी हाथों के लिये
शाँति का लेख
पंजा लड़ाने वाले हाथों के लिये
हाथ मिलाने का सदेश"

X X X X X X

"खुरों के होते नही नाम
फिर उँगलियों के क्यों होने लगे नाम ?"

एक

उँगलियों !
कब से सीख लिया तुमने
गूथने–पिरोने की जगह
नोचना–बिखेरना
बनाने–बसाने की जगह
बिगाडना–उजाड़ना
सजाने–सँवारने की जगह
उखाड़ना – पछाडना
जोड़ने–गाँठने की जगह
तोडना फोडना
सहलाने–दुलराने की जगह
कुचलना–मसलना
उगाने–लगाने की जगह
रौंदना–गिराना
पोंछने–निकालने की जगह
चुभोना–गड़ाना
हाथ, शरीर और प्रकृति को
कुछ देने की जगह
बस लेते ही रहना
दिन प्रति दिन हाथ की नसे
दिखती जा रही है स्पष्ट
शरीर होता जा रहा है
पीला
प्रकृति के गलते जा रहे हैं
अंग

अरे ये तो धर्म हैं
खुरों और पंजों के

भटक गई हो उँगलियो !
भटक गई हो तुम
धर्म से अपने,
लौट आओ वापस

अभी शाम नही हुई है
सूरज अब भी चमक रहा है
बस दिखाई नही दे रहा है
छाये हुये धुँये, कोहरे
और बादल से

जब–जब अधिकतर
हाथो की उँगलियाँ
भटक जाया करती हैं
धर्म से अपने
तब–तब न जाने कहाँ से
आ ही जाती हैं
कुछ ऐसे हाथों की उँगलिय
जो अतत:
हटा ही देती हैं
छाये हुये धुये, कोहरे
और बादल को
और दिखा ही देती हैं उन्हे
धर्म का रास्ता

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव (

दो

जैसे–जैसे बढ़ती जायेगी
हाथों की संख्या
से–वैसे उन सबको चाहिये
और जमीन,
और काम,
और सुविधाये

हाथो की नई जमीनें होगी
छिछली पानीदार पोखरियॉ,
हरे–भरे पेड़–पौधे,
लहलहाते खेत,
घने जंगल,
नादियो के पाट
इस प्रकार सिकुडते जायेगे
ताल–तलैये,
बाग – बगीचे,
खेत–खलिहान,
वन–नदियाँ

हाथो के नये खुराक होंगे
चलते – फिरते पशु,
उड़ते–फिरते पक्षी,
तैरती–फिरती मछलियाँ
और इस प्रकार गायब होने
लगेंगे
पशु,
पक्षी,
जलचर

अधिकतर हाथ काम के न
पर
या तो मारेंगे मक्खी
या फिर पैदा करेगे
और छोटे–छोटे हाथ

सुख–सुविधा के नाम पर
हाथ उड़ेगे पक्षियो की त
आकाश में,
तैरेंगे मछलियों की तरह
समुद्र में,
निकालेंगे तेल
पाताल से
और इस प्रकार बॉध लेगे
अनत आकाश,
उफनता सागर,
छिपा पाताल
और छेद देंगे ओजोन का
प्राणदायी पर्त

और कुछ समय बाद
खेतों मे अनाज की जगह
उगेंगे हाथ,
जंगल में पेड़ों की जगह
उगेंगी चिमनियाँ
और पशुओं की जगह
उछलेंगे–कूदेगे हाथ,
आकाश में पक्षियो की ज
उड़ेंगे हाथ,
समुद्र में मछलियों की ज
तैरेगे हाथ

फिर कुछ दिनों बाद
एक समय ऐसा आयेगा
जब पक्षियो के नाम पर
रह जायेंगे गिद्ध,
पशुओ के नाम पर
बच जायेगे
कुत्ते, भेड़िये और गीदड़,
हरियाली की जगह
खेगी दरकी–चटकी जमीनें,
नदियों की जगह
मिलेगी रेत–खाली रेत,
हवा के नाम पर
बहेगी तरह–तरह की गैसें
नहीं बहेगी तो केवल
आक्सीजन
शेष रह जायेंगे
बस हाथ
हर तरफ दिखेंगे
हाथ ही हाथ
और तब अधिकतर हाथ
आपस में ही लड़–लड़ कर
हो जायेंगे खतम
जो बचे रहेंगे उन्हें
नोच–नोच कर खाते रहेंगे
गिद्ध, कुत्ते, भेंडिये
और गीदड

फिर भी बचे रहेंगे
बचे रहेंगे जमीन के
किसी कोने–अँतरें में
किसी खोह–गुफा में
इने–गिने हाथ
जो ढूढ़ ही लेंगे
कहीं न कहीं
दूब,
पा ही लेंगे
कहीं न कहीं
आक्सीजन,
पहुँच ही जायेंगे
किसी न किसी
लुप्त हो रहे
पानी के सोते के पा

बचे रहना
ओ ! इने गिने हाथ
बचे रहना
और बचाये रखना
थोड़ी सी आक्सीजन
पानी की पतली सी
और थोड़ी सी दूब

सुरेश चन्द्र श्री

तीन

—अलग कद काठी वाली
उँगलियों ! जुड़ो !
जुड़ो एक दूसरे से
ताकि हाथ
बजाय दिखाने को अँगूठा
तान सके घूँसा

लग—अलग रेखाओ वाली
उँगलियो ! मिलो !
मिलो आपस में
ताकि हाथ
बजाय उठाने के तर्जनी
दिखा सके तमाचा

अपनी—अपनी रगों में
एक ही लहू रखने वाली
उँगलियों ! एक हो !
एक हो मिल जुल कर
ताकि हाथ
बजाय काटने को कुट्टी
बाँध सके मुट्ठी

चार

मूँड दो ! उँगलियों !
मूँड़ दो दाढ़ी
भले ही इसके लिये तुम्
सफाचट करना पड़े
चेहरा

मूड़ दो ! उँगलियो !
मूड़ दो चोटी.
चाहे इसके लिये तुम्हें
सफाचट करना पडे
सर

मगर सफाचट करने के
चेहरा और सर
पकड़ना नहीं भिक्षापात्र
करना नहीं
जंगल की ओर रूख

पाँच

माना कि खुरों के
होते नहीं नाम
फिर भी दो खुर वालों
क्यों नहीं एक को
कहा जाता 'अगड़ा'
और दूसरे को 'पिछड़ा'
क्यों नहीं एक को
कहा जाता 'दायाँ'
और दूसरे को 'बायाँ'

छः

बायें हाथ में पकड़ना गुलदस्ता
मूल्यों, परम्पराओं, मान्यताओं
के फूलों का
और दॉये हाथ से लिकालते
जाना
इनमे से मुरझा जाये जो
और रखते जाना उनकी जगह
ताजे–ताजे, खिले–खिले
दाये हाथ से ही

अच्छा लगता है
और अच्छा होता है
बॉये हाथ मे यह गुलदस्ता
और अच्छी तरह
निकाल – खोंस सकता है
मुरझाये–खिले फूल इससे
दाहिना हाथ

सात

छान मारो उँगलियों !
वीहड़–जंगल, कछार–पठार
मैदान–सीवान, बाग–बगीचा
और ढूढ लो
गुलाब की तरह उस पौधे को
जो निकाल दिया हो बाहर
अंदर की अपने
सारी की सारी कठोरता
होकर बेडौल,
सारी की सारी कलुषता
बनकर कॉटेदार
और छिपा रखा हो अंदर
सौदंर्य का सागर,
कोमलता की पृथ्वी,
सुगंध का आकाश
खिल खिल कर बाहर
आ जाता हो जो
समय–समय पर उससे
एक साथ

मॉग लो उससे
उसकी एक टहनी
और लगाओ इसका कलम
सड़कों के किनारे,
बाग–बगीचो मे
द्वार पर, ऑगन मे,
बरामदे के गमलों में
यहॉ तक कि कमरो के अ
खिड़कियों पर
छोटे–छोटे डिब्बो में
तुम देखोगी कि हर जगह
बिखरा मिलेगा
सौंदर्य ही सौंदर्य,
कोमलता ही कोमलता,
सुगंध ही सुंगध .

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव

आठ

अँगूठे ! तुम जगते रहना
तर्जनी ! तुम भी
तुम दोनों मिलकर
पकड़ना छेनी और हथौडी
और काट–छाँटकर,
ठोक पीट कर
गढते जाना, तरासते जाना
हर बेडौल को, हर खुरदुरे को
सेंध लगाना भी
तो किसी महान आत्मा के घर
और चुपके से छू लेना
सोते में उनके पॉव

तुम दोनों मिलकर पकड़ना ब्रुश
और भरना खीचे गये चित्रों मे
हल्का हरा–गुलाबी
कपोतवर्णी रंग,
भरसक कोशिश करना
कि भरना न पड़े कभी
लाल भमूक रंग,
बगावत कर देना यदि कभी
मजबूर होना पड़े भरने को
स्याह काला रंग,
आवश्यकता पड़ने पर
भर लिया करना श्याम–श्वेत रंग

तुम दोनों मिलकर थामना कलम
और लिखना सभी हाथो के लिये
शांति का लेख,
पंजा लड़ाने वाले हाथों के लिये
हाथ मिलाने का संदेश,
अकारण बेंत खाने वाले
हाथों के लिये
मुट्ठी बॉधने की कला का
नुस्खा

तुम दोनों मिलकर
पकड़ना सुई और तागा
और जोडते रहना हर
कटे हुये को,
सिलते रहना हर फटे हुये को

तुम दोनों मिलकर
निकालना काँटा यदि मिले
किसी पाँव में गड़ा हुआ,
निकालना किरकिरी यदि मिले
किसी ऑख में पड़ा हुआ

अनामिका यदि जगेगी भी अँगूठे
तो देखेगी सपने या
सजाती रहेगी अपने आपको
इसलिये आराम करने दो उसे
और होने दो तरो–ताजा
ताकि समय पड़ने पर
आहुति देने में
नये दम खम के साथ
साथ दे तुम्हारा मध्यमा के स

कनिष्ठा यदि जगेगी भी
तो करेगी नहीं कोई काम
बस काटती रहेगी कुट्टी
इसलिये सोने दो उसे
और होने दो तरोताजा

क्योकि समय पड़ने पर
हाथ जब मारेगा मुक्का
कनिष्ठा ही खायेगी चोट

मध्यमा यदि जगेगी
म्हारे साथ मिलकर अँगूठे !
या तो बजायेगी चुटकी
या फिर फेरेगी माला
और इस प्रकार उलझाये
रहेगी तुम्हे
इसलिये सोने दो उसे
और होने दो तरोताजा
ताकि समय पडने पर
आहुति देने में
नये उमंग के साथ
साथ दे तुम्हारा अनामिका
के साथ

अँगूठे! तुम जगते रहना
तर्जनी ! तुम भी
रही हों और सब उँगलियाँ
तो सोने दो
आराम कर रही हो और
सब उँगलियाँ
तो करने दो आराम

नौ

खुरों के नाम नहीं होते
न पंजो के
फिर उँगलियों के
क्यों होने लगे नाम ?

दस

गेंहूँ के साथ यदि पिसे जाते हैं घुन
तो इसमे उँगलियों का क्या दोष ?
दोष घुन के हैं जो रहते हैं
गेहूँ के बीच

गेंहूँ बोती हैं उँगलियाँ अपने लिये
गेहूँ काटती हैं उँगलियाँ अपने लिये
गेंहूँ इकट्ठा करती हैं उँगलियाँ
अपने लिये
फिर किस अधिकार से घुस आते हैं
घुन गेंहूँ के बीच
घुस ही नहीं आते घुन गेंहूँ के बीच
बल्कि चूसने लगते हैं उनके रक्त
निगलने लगते हैं माँस और मज्जा

मगर शरीफ हैं उँगलियाँ
कि गेहूँ के साथ घुन को पीसने
के पहले डालती हैं वे उन्हें पानी में
ताकि घुन बनें पानीदार
और खुद निकल जायँ बाहर
फिर उन्हें दिखाती हैं
सूरज की रोशनी
कि उजाला हो जाय दिलों में उनके
और खुद लौट जायें घर

पर इसके बावजूद भी
चिपके रहते हैं
कुछ घुन गेंहूँ के साथ
जोंक की तरह

ी है, लेकिन मूल्यों में शाश्वतता भी। जैसा कि
ैत है, यह महाकाव्य आदमी को आदमी बना
समझने का, आदमी–आदमी के बीच दूरी कम
ो एक परिवार समझने का एक प्रयास है– य
ा जाने का प्रयास है, जो सभी का है।

डा0 रजनीश प्रसाद मिश्र
केन्द्र निदेशक
आकाशवाणी, इलाहाबाद

सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव

: 11 जून 1944
असबरनपुर, जौनपुर (उ0 प्र0)

बी ई (आई0 टी0)

1 परिचय (काव्य संग्रह)
2 फूलो सा खिले (काव्य संग्रह)
3 अभिव्यक्ति (गीत संग्रह)
4 उद्‌गार (गीत संग्रह)
5 फैला हुआ हाथ
(भारतीय दलित साहित्य अकाद
अम्बेडकर फेलोशिप से सम्मानित
काव्य संग्रह)
6. हाथ की उँगलियाँ (महाकाव्य)

अधिशाषी अभियंता
जल संस्थान, कानपुर

हाथ की उँगलियो के माध्यम से पूरा का पूरा समाज शास्त्र, मानव शास्त्र, वर्ण व्यवस्था, अहिंसा, अध्यात्म, अर्थ शास्त्र, राजनीति, इतिहास, सस्कृति इत्यादि व्यक्त कर देना अपने आप में एक अलग और अनूठा प्रयोग है। इसमे जहॉ 'जियो और जीने दो,' 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'तेन त्यक्तेन भुजीथा ', 'अहिंसा परमो धर्म , 'सादा जीवन उच्च विचार', जैसे 'भारतीय दर्शन' का दर्शन होगा वही 'वर्क इज वर्शिप', 'स्ट्रगल इज लाइफ' जैसे 'पाश्चात्य दर्शन' का भी।

इन कविताओ में कल्पना की उडान यथार्थ की डोर से बँधी और धरती से जुडी हुई है। कथ्यों मे साकेतिक आभिव्यजना है। लगभग सभी कविताये प्रतीको और विम्बों के माध्यम से लिखी गई हैं। कुछ कवि अभिव्यक्ति के लिये विशिष्ट शब्दो की खोज करते है जबकि हाथ की उँगलियो का कवि विशिष्ट प्रतीक की खोज करता है। ये विशिष्ट प्रतीक भी कथा/गाथा/मिथ सृजन की भूमिका बनाने लगते है।

इन कविताओ को एकाग्रचित होकर, ध्यान से, रुक–रुक कर, समझ–समझ कर, दोहरा–दोहरा कर पढने की जरूरत है। ये कवितायें ह्रदय को छूती हैं–अधिकतर तो कुरेदती हैं और कई–कई तो झकझोर भी देती है। कहीं–कहीं गभीर तर्क/विचार से कुछ कविताये बोझिल और कहीं–कहीं उपदेश से कुछ कविताये कमजोर प्रतीत होती हैं लेकिन बार–बार पढने पर उनके अर्थ से साक्षात्कार होते ही कविता की शक्ति से रु–ब–रू होने लगते है– विचारो की उर्जा महसूस करने लगते हैं। विम्ब विधान भी मौलिक है।

हर काल, हर देश, हर परिस्थिति मे प्रासगिक इस रचना को, हो सकता है, अधिकतर लोग लम्बी कविता ही कहें जबकि यह अन्य लम्बी कविताओ से हटकर है– अलग तरह के पात्र और कथानक के साथ– लगभग सभी प्रचलित शास्त्रो तक पाँव पसारती हुई – वर्तमान समय (जो महाकाव्यो का नहीं रहा) मे महाकाव्य के लिये नये मान–दण्ड की अपेक्षा करती हुई – आलोचको को एक दर्शन के रूप में, एक रूपक के रूप में, एक नए तरह के फास्ट महाकाव्य के रूप मे विषय देती हुई– बुद्धिजीवियों को उनके विषयों की जीवन्त व्याख्या देती हुई।

यद्यपि 'हाथ की उँगलियों' के सभी सर्ग सशक्त और प्रभावशाली है लेकिन इसका अर्थ सर्ग (हाथ और अर्थपात्र), अहिंसा सर्ग (उँगलियॉ और नाखून) तथा वर्ण व्यवस्था सर्ग (अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा) सर्वाधिक सशक्त और प्रभावशाली है।

'हाथ की उँगलियाँ' आदमी को आदमी बनाये रखने का, विश्व कल्याण की भावना जगाये रखने का और अप–सस्कृति के विरुद्ध लडाई जारी रखने का एक सार्थक प्रयास है।